परसार के गउंदन

(छत्तीसगढ़ी कहिनी सिलोह)

जयंत साहू

परसार के गउंदन

(छत्तीसगढ़ी कहिनी सिलोह)

Writer

Jayant sahu

Chhattisgarhi story

Parsar ke gaundan

Khushi Graphics

लेखक

जयंत साहू

आवरण परिकल्पना

श्रीमती धनेश्वरी साहू

कम्प्यूटर ग्राफिक्स

उमेश साहू , विनोद सोनी

प्रकाशक

नव उजियारा

सांस्कृतिक एवं साहित्यिक संस्था, रायपुर

प्रथम संस्करण- **सन् 2014**

द्वितीय संस्करण- **सन् 2016**

सहयोग राशि- **200/ रूपये**

सर्वाधिकार-लेखकाधीन

जयंत साहू

ग्राम-डूण्डा, पो. सेजबहार, जिला-रायपुर

(छ.ग.) मो. 09826753304

Email-jayantsahu9@gmail.com

समरपन

पिता श्री अमरसिंह साहू

माता श्रीमती पार्वती साहू

दुनियां म जनम देवइया,
करनी करम उभरइया।
बल अउ विवेक बड़हइया,
जय होवय तोर जय होवय,
मय डंडा सरन परवं पइया।।

* * *

अपन गोठ ...

मोर लेखन के सुरुवात छत्तीसगढ़ राज बने के बाद होइस। वइसे आगू घलो मैं स्कूल म पढ़त रेहेवं तब कार्यक्रम म भाग ले खातिर कविता, भासन, निबंध लिखवं अउ ओला बोलवं। फेर ये लिखई ल मैं अपन लेखन के सुरुवात नइ मानवं, ह बीज जरुर रोपित होगे रिहिसे। राज बने के बाद चारों मुड़ा छत्तीसगढ़ी के सोर बगरत देखके मोरो भीतर के लेखक ह उमियागे। अपन कलम ल कोनो खास विधा म नइ बांधे हवं जेन डहर के विचार उमड़्थे उहे मोर लेखनी रेंग देथे। कहिनी, कविता, बियंग, नाटक, गीत, लेख, खबर, शोध अब आगू अऊ का-का सिरजन होही बेरा बताही।

2000-01 म मैं रंगमंच ले जुड़ेवं अउ संग म कुछू कहीं लेखन घलो करत रेहेवं। इही दरी मे आकाशवाणी रायपुर के डेहरी खुंदेवं युववाणी म 'आज मोर पारी हे' कार्यक्रम दे खतिर। मन म विश्वास जागिस ताहन रम गेवं इही रट्टा म। आज आकाशवाणी म वार्ता, कहिनी, कविता के दौर चलते हे संग म 2008 ले सरलग रायपुर दूरदर्शन के भुंइया के गोठ कार्यक्रम के संचालन करत हवं।

अब प्रकाशन के बात करवं तव दैनिक अखबार हरिभूमि के चौपाल म मोर पहिली कविता 'दिन देवारी हे' छपिस। ओकर बाद बरछाबारी, देशबंधु, अमृत संदेश, प्रखर समाचार, इतवारी, छत्तीसगढ़, किसान वीर, पत्रिका सहित अऊ गजब अकन पत्र-पत्रिका म सरलग लेखन अउ प्रकाशन चलते हे संग म आकशवाणी, दूरदर्शन अउ रंगमंच कोती घलो रमे हाबवं।

माता-पिता अउ परिवार के साहमत ले आज अपन नानकुन साहित्यिक जीवन के कुछ रंग ल कहिनी के रुप म उतार पाय हवं। जेमा के तेरह ठन कहिनी ल 'परसार के गउंढन' किताब म समोखे हवं। आसा हे पढ़ईया मन के मन आही। साहित्य के रट्टा धरइया चंद्रशेखर चकोर, लोक कला के रंग म रंगइया राकेश तिवारी, अऊ ये रट्टा म डटे रेहे के बल देवइया सबो सुजानी सियान मन के पॉलगी करत ये कहिनी सिलोह परोसत हवं। बने लागही त अऊ बने-बने लिखे के मोला आसिस दिहव।

❑ **जयंत साहू**

साहित्यकार / पत्रकार

आसिस ....✍

चन्द्रशेखर चकोर

मयाशीस 29-3-2014

छत्तीसगढ़ी मासिक समाचार पत्र 'अंजोर' के संपादक जयंत साहू ह छत्तीसगढ़ के भासा, संस्क्रिती अउ स्वाभिमान बर सुग्घर गुनान करत, छत्तीसगढ़ी भासा-साहित्य के विकास काल म सजोर अउ ऊँचहा पार पोगराये हावे। इही पांत म अपन छत्तीसगढ़ी कहिनी सिलोर "परसार के गउंदन" छपवावे।

बने ल सबोच सहराये। गोन्दा-गउंदन के महिमा ल जानबे त जयंत ह. काबर के गउंदन ह जादू के जग म कलम के कमाल ल सजोर अउ सुग्घर बनाये। जयंत के ये कहिनी सिलोर ल छत्तीसगढ़ी भासा ह मानही। जेंहड़ी मानही, उतकेही अउ लोगो मनवाही। मोर मयाशीस सबर संग हे। सुग्घर गुनते रहव, लिखते रहव अउ छत्तीसगढ़ी भासा के संग इहां के भाखा-संस्क्रिती ल सबो गहदाये के उदीम म जोंगत रहव।

चन्द्रशेखर चकोर
ग्राम-कान्दुल पो. सुन्दर नगर
जि. रायपुर (छ. ग.)

भूमिका ...

छत्तीसगढ़ी भाखा के गद्य साहित्य अब धीरे-धीरे सजोर होए ल धर लिए हे। आज ले पचीस-तीस बछर के बात आने रिहिसे जब हमन 'मयारु माटी' जइसन पत्रिका मन के माध्यम ले एला पोठ करे खातिर लोगन ले केलौली करत राहन। आज गद्य साहित्य म न सिरिफ कहानी अच्छा लिखे जावत हे, भलुक हास्य-व्यंग्य, नाटक, लेख, संस्मरण, रेखाचित्र, मुंहाचाही जइसन जम्मो विधा म गद्य लेखन करे जावत हे। मोला ये कहे म कोनो किसम के लाज-भय नइ लागत हे, के आज के नवा पीढ़ी के लिखइया मन ह साहित्य के जम्मो विधा म पोठ लिखत हें, अउ सबले बढ़िया बात ये हे, के एमन ल प्रकाशन खातिर मंच घलोक मिलत हे। न सिरिफ छत्तीसगढ़ी म 'लोकाक्षर', 'बरछाबारी' जइसन पत्रिका निकलत हे भलुक दैनिक पेपर मन म 'मड़ई', 'चौपाल', 'अपन डेरा', 'पहट' जइसन छत्तीसगढ़ी परिशिष्ठ घलोक निकलत हावय, जेमा ये नवा लिखइया मनला पोठ छापे जावत हवयं।

आज के नवा लिखइया मन म वइसे तो कतकों अकन नांव हावय, जेकर मन के कारज ल संहराए जा सकथे, फेर मोला लागथे के एमन म जयंत साहू एक अइसे नांव हावय, जेकर चिन्हारी ह अउ दूसर मनले थोर-बहुत जादच दिखथे। जयंत साहू न सिरिफ साहित्य के जम्मो विधा म कलम चलावत हे, भलुक कला के क्षेत्र म घलोक अपन भागीदारी निभावत हावय। सबले बढ़िया बात ये हवय के जयंत ह विज्ञान के नवा चमत्कार के घलोक रस्ता धर लिए हावय। वो ह इंटरनेट म ब्लॉग घलोक लिखत हावय। 'चारीचुगली' के नांव ले लिखे जावत ये ब्लॉग ह जयंत के संगे-संग हमर छत्तीसगढ़ी भाखा ल घलोक देश-दुनिया के सैर करावत हावय। मैं ह दैनिक 'अमृत संदेश' म 'अपन डेरा' नांव के एक ठन बिरवा बोए रेहेंव, तेनो म आज खातू-पानी डारे के कारज ल जयंत साहू ह पूरा करत हावय।

अभी मोला वोकर कहानी संग्रह 'परसार के गउंदन' के पाण्डुलिपि पढ़े ल मिलिस। निश्चित रूप ले ये जम्मो कहानी मन

कोनो न कोनो संदेश जरूर देथें, जेकर आज जरूरत घलोक हावय। एक समय रिहिसे जब साहित्य लेखन ह सिरिफ देश भक्ति, भुइयां-पानी, प्रकृति के तीर-तखार अउ जादा होगे त अध्यात्म के आगू-पाछू घूमत राहय। फेर आज के लिखइया मन आज के बात ल लिखत हावयं। 'परसार के गउंदन' म कुल 13 कहानी के संग्रह हावय, जेमा शीर्षक कहानी परसार के गउंदन के संगे-संग गोबरहिन डोकरी, चुगलाहा, मनटोरा, लाली चुरी, ईनाम, दनगरा, मइके के सुरता, जंगल के पै, सुख के दिन,मया अउ माया, दुरपती अउ सइताहा शामिल हावय।

शीर्षक कहानी 'परसार के गंऊदन' ह आजकाल के लइका मन संगती के चक्कर म परके बिगड़त जावत हावयं तेकर ऊपर आधारित हावय, त 'गोबरहिन डोकरी' ह सियान मन के अक्कल म चले के सीख देथे। कहानी 'चुगलाहा' ह अपन नांवेच ले जनवावत हावय के चारी-चुगली करने वाला मन के मारे चारोंमुड़ा के माहौल खराब हो जाथे, एकरे सेती सियान मन अइसन लोगन ले दुरिहा रहे के सोर देथें। 'मनटोरा' प्रेमकथा ऊपर आधारित हावय, जे ह अपन अवस्था के लोगन मनला प्रभावित करथे, चाहे वो ह लेखक होवत ते पाठक। 'लाली चूरी' बाल विवाह ऊपर आधारित हावय, जे ह आज घलोक हमर देश म अभिशाप के रूप म जिंदा रहिगे हावय, खास करके ग्रामीण क्षेत्र म जिहाँ शिक्षा के अँजोर अभी तक पहुंच नइ पाए हे। ए शिक्षा के कमी ल दुरिहा खेदार के ज्ञान के अँजोर ल प्रोत्साहित दे खातिर एक अउ कहानी के सिरजन करे गे हावय, जेकर नांव हे 'ईनाम'।

अभी छत्तीसगढ़ राज अलग बने के बाद इहाँ जमीन के खरीदी-बिक्री ह भारी बाढ़गे हावय, अउ एकरे संग जमीन दलाल मन के संख्या अउ उत्पात घलो बाढ़गे हावय। जमीन दलाल मन के चाल-चरित्र ल उजागर करत एक कहानी के सिरजन करे गे हवय, जेकर शीर्षक हे 'दनगरा'। माईलोगिन मन चाहे कतकों बुढ़ा जावयं, फेर जब तीजा-पोरा के बेरा आथे त 'मइके के सुरता' अवस के करथें, इही भावना ल व्यक्त करत ये कहानी के सिरजन करे गे हवय जेकर शीर्षक घलोक 'मइके के सुरता' हावय।

अभी हमर छत्तीसगढ़ म सबले बड़े समस्या के रूप म जेन उत्पात मचावत हावय वो हे 'नक्सल' समस्या। कोनो भी बौद्धिक वर्ग के आदमी अइसन समस्या ले अनजान नइ रेहे सकय, त भला एक संवेदनशील साहित्यकार कइसे एकर ले दुरिहा रहि सकथे, जयंत साहू नक्सल समस्या

ऊपर आधारित एक कहानी के सिरजन करे हावय जेकर शीर्षक हावय 'जंगल के पै'। कहानी 'सुख के दिन' म महिला मनला अपन बल-बुता म अकेल्ला चले के सीख दिए गे हवय, त 'दुरपती' म द्वापर के दुरपति कस अत्याचार के विरुद्ध लड़े के सीख दिए गे हवय। 'हूम देवा' म मौसी दाई के दुख ल बताए गे हवय, त 'सइताहा' म खेती-किसानी अउ घर के झगड़ा-झंझट के बारे म बताए गे हवय।

ये जम्मो कहानी मन के भाखा अउ लिखे के शैली बहुत अच्छा हावय। सबले बढ़िया बात ये हे, के एमा ठेठ ग्रामीण शब्द मन के उपयोग करे गे हवय, जेला आज बहुत कम साहित्यकार मन के रचना म देखे ल मिलथे। कहानी के शीर्षक मन ल ही देखे जा सकथे, जेमा आरुग छत्तीसगढ़ी शब्द मन के दरसन होथे। 'जंगल के पै', अब ये 'पै' शब्द हे, जेकर कतकों झन आज के बेरा म अरथ घलोक नइ जानत होहीं। फेर जयंत साहू गाँव के माटी के उपजन-बाढ़न आय, तेकर सेती वोकर लेखनी म अइसन शब्द मन के आना स्वाभाविक हे।

मोर शुभकामना हे के वोहर अइसने अच्छा अउ प्रेरणादायक साहित्य मन के सिरजन करत राहय, छत्तीसगढ़ महतारी के कोरा ल अपन कलम के माध्यम ले भरत राहय। मोला ये नवा लिखइया मन के उत्साह, समर्पण अउ साहित्य के विषय ल देख के अइसे जनाथे के छत्तीसगढ़ी ह अब न सिरिफ 'राजभाषा' भलुक 'विश्व भाषा' के ऊंचाई तक पहुँच के रइही।

धन्यवाद,

❑ **सुशील भोले**
41-191, डॉ. बघेल गली,
संजय नगर (टिकरापारा) रायपुर (छ.ग.)
मोबा. नं. 098269 92811

पाँत

1.	गोबरहिन डोकरी	-	11
2.	मनटोरा	-	14
3.	चुगलाहा	-	18
4.	लाली चूरी	-	21
5.	परसार के गउंढन	-	25
6.	ढनगरा	-	31
7.	मइके के सुरता	-	35
8.	दुरपती	-	39
9.	मया अउ माया	-	43
10.	सुख के ढिन	-	49
11.	ईनाम	-	52
12.	जंगल के पै	-	56
13.	सइताहा	-	62

एक

गोधुली बेला म गांव डहर लहुंटत बरदी। गांव भर के गरवा ल हांकत बरदिहा अउ बरदिहा के पाछू म गोबर्‌हिन। येहा रोज के किस्सा आय। बिहनिया ले बरदिहा मन गांव के गरवा ल दइहान म सकेलथे अउ अलग-अलग टेन बना के चराय बर परिया कोती, बनडबरी कोती लेगथे। माई लोगिन मन गोबर बिने बर झऊंहा धर के निकलथे। गरवा के पाछू-पाछू उवत के बुड़त किंजरथे। जतके गरवा ततके गोबर्‌हिन।

एकक चोता बर चिथो-चिथो होवत रिथे। रोज असन आजो जवान मोटियारी मन तो झऊंहा-झऊंहा गोबर ल मुड़ी म बोहे लिचलिच-लिचलिच आवथे। उकरे पाछु म सुकवारो डोकरी ह सपटा भर खरसी-गोबर ल बोहे कोंघरे-कोंघरे आवथे। जीये बर खाय ल लागथे अउ खाय बर कमाय ल, बपरी डोकरी ह कमा-कमा के आधा उमर पोहा डरिस। ओकर आगू हंसइया न पाछु रोवइया। दाउ दरोगा घर लकड़ी छेना बेच-बेच के जिनगी के गाड़ी घिरलावथे।

आज डोकरी हा आधा झऊंहा गोबर ल पाइस ताहन लकर-धकर घर आगे। कभू काल तो पाथे। झऊंहा ल बाहिर म खपल के अछरा म पछीना ल पोछत भीतर म खुसरिस। एक कुरिया के घर वहू बिन कपाट सकरी के। खटिया उधे रिहीस तेला गिराके बइठीस। थकहा जांगर एक सांहस हकन के सुरताइस।

डोकरी के निंद उमचिस त मुंधियार होगे रिहीस। चिमनी बार के आगी सिपचइस अउ अपन पुरती भात ल रांध घला डरिस। एक परोसना खाके आधा ल बासी बोर के खटिया म ढलंगे। डोकरी सुते-सुते मने मन गुनथे-'कब तक अइसने

जिनगी चलही? दिन दुकाल के बेरा म कहां के बनि-भुती मिलही। खेत-खार परिया परगे। बुड़हत काल म का खंती के ढेला उकलही भगवान, अब मोला ल अपने तिर तिरिया लेते ते महु सुभित्ता हो जातेव'।

सिरतोन बात ताय दिन दुकाल म सबेच ल तो काम बुता चाही। असाढ़ म एक पानी के गिरे ले सबो झन धान ल बो डरिस। फेर ठऊका आय असाढ़ म पानी निटोर दिस। बिगर पानी के धान-पान घलो, खेत खार म आंखी निटोर दिस। पानी बिन सबो के खेत सुखागे।

गांव के बड़े दाउ कुंवा बोर वाला ये, गांव भर म उहीच भर गाड़ा-गाड़ा धान ल लुइस। गांव के मन इही आसरा म रिहीस के दाउ घर बाड़ही मांग के चार महीना के भुखमरी ल काट लेबो। अउ फेर साल के धान होही तेमा बड़े दाउ के चुकारा कर देबो। धीरे-धीरे सबो किसान के कोठी अटागे।

सबो किसान एक दिन सुनता करके बड़े दाउ करा बाड़ही मांगे बर गीस। हाथ जोर के सबो झन बिनती करिस- 'मालिक हमर घर म एको बीजा चाउंर नइहे थोर बहुत साहमत करवं, हमरो फसल होही ताहन लहुटा देबो।' बड़े दाउ ह तो निचट जीछुट्टा निकलीस। गजब कलप डरिस। तभो ले दुच्छा के दुच्छा लहुटा दिस।

सबो गारी-बखाना देवत ओकर घर ले निकलगे। जाही तिहा जोर के लेगही रोगहा ह, अतेक धन दउलत ल अपन मुड़ेसा म जोरे बइठे हे। सियान मन तो कले चुप रइगे। जवान मन अतलंगहा होथे। जवानी जोसियागे। दाउ ह सोन के थारी म खाथे अउ गांव वाला मन के खाय बर दाना नसीब नइ होवथे।

चार झन टूरा मन दाउ ले तंगागे। मांगे म नइ मिले त नंगाय ल परही अइसे बिचार लगाके रातकुन कुलुप अंधियार म बड़े दाउ के बाड़ा म घुसरगे। दाउ के जोगासन म माड़े कुची ल धरिस अउ तिजउरी ल खोल के एक मोटरा सोने-सोन के मोहर ल गठियाइस अउ पल्ला निकलगे। ओइलत खानी तो कोनो गम नइ पइस फेर भागे के बेरा पहरादार मन देख परिस। बाड़ा भर चोर.. चोर... चोर कहिके हो हल्ला होगे।

चोरहा मन भागत-भागत गोबर्हिन डोकरी के घर म लुकागे। येती बर दाउ के लठैत मन गांव भर म बगरगे। घरो घर तलासी सुरु होगे। येती बर इकर मन के जी थरथरागे पकड़ा जबो त मोहर जही अउ हमर मन के जान घलो जाही। उकर खुसूर-फुसूर बड़बड़ई म सुकवारो डोकरी के निंद उमचगे। कोन-कोन हव रे कइके हुत पारथे। चारो झन टूरा मन डोकरी के पांव म गिरगे। सबो बात ल फोरिहा

के बताइस। डोकरी ल चोरहा टूरा मन उपर दया आगे। डोकरी किथे- मैं ह तहू मन ल बचाहू अउ ये मोहर ल घलो फेर मोर एक ठन सरत हे। चोरहा मन पुछिस का सरत हे दाई। डोकरी किथे- पकड़ाहूं त मैं, अउ बांच जाहू त ये मोहर ल गांव भर म बाट देहूं। चारो झन डोकरी के सरत ल मान के मोहर ल डोकरी ल धरा के अपन-अपन घर कोती टरक दिस। मुंदराहा होइस ताहन डोकरी ह मोहर के गठरी ल परवा म टांग के झऊंहा धरिस अउ निकलगे अपन बुता म। पहरादार मन डोकरी ल सियनहिन ए कहिके कांहि नइ किहिस। डोकरी ह झऊंहा भर गोबर बिन के आगे। घर के परवा म खोचाय मोहर ल गोबर म गिलिया के सइत दिस। वोतके बेरा बड़े दाउ के लठियारा मन घलो घरो-घर तलासी लेवत डोकरी घर आगे।

सबो समान ल छिही-बिही करके खोजिन फेर नइ पाइस। लठियार मन के जाय के बाद डोकरी अपन बूता म लगगे। गिलीयाए गोबर ल धरके ओरी-ओरी बियारा के भाड़ी म छेना थोप डरिस। चोरहा टूरा मन सोचते रइगे। मोहर काहां कुलुप होगे। मोहर कहू जाय फेर उकर तो जीव बांचगे।

बड़े दाउ ह अपन पहरादार मन ल खिसयावत घर लहुंटगे। अउ फैसला करिस कि मोहर ह गांव म काकरो घर नइ मिलीस फेर मोहर गांव ले बाहिर गे नइहे। धरे होही त देख-देख के थोरे जिही। जिये बर चाउर दार बिसाय ल परही। कब तक बेचे बर नइ निकलही। गांव के बाहिर पाहरा लगा दव अवइया-जवइया सबके तलासी करे बर।

येती बर छेना सुखाइस ताहन गोबर्हिन डोकरी ह अपन सरत के मुताबिक एकक ठन छेना गांव भर म बांट दिस। छेना देके बेरा डोकरी ह कान म फुसुर-फुसुर करे। बड़े दाउ ह डोकरी ल छेना बाटत देखिस फेर वो का जानय कि छेना के भितरी म मोहर दबे हे तेला। गांव के मन मोहर बेचे बर निसंसो बजार जाय। अउ ए बात के पहरादार मन ल घलो गम नइ होय। वो मन सोचे छेना बेचे बर बजार जाथे। गांव के मन बजार ले अपन-अपन खाये-पिये के समान ल बिसा के ले लाने।

अइसन सियानी मति ले गांव भर बर दार-चाउर के जुगाड़ होगे। चोरहा मन के संगे-संग गांव वाले मन घलो डोकरी के अक्कल ले अपन जीव बचा लिस। एक ठन बुराई ले गांव भर के भलई होगे। अब अवइया असाढ़ के आवत ले तो जिनगी चल जही। गोबर्हिन डोकरी जेकर माथा म दिन भर गोबर छबड़ाय राहय ओकर मति ल तो देख, दरिदरिन कस दिखे फेर गांव भर के दरिदरी ल दूरिहा दिस। गांव के मन डोकरी के जय जय गइस अउ दिन दुकाल ले निसफिकीर होगे।

चइत बइसाख के महीना तो बर बिहाव के सिजन आय। जेती देखबे तेती गढ़वा बाजा ह बाजत रइथे। किथे न मांग फागुन म मंगनी–जचनी, चइत बइसाख म बर–बिहाव अउ काम बुत ल उरका के सगा घर लाड़ू बरा बर रतियाव। चड़ती मंझनिया के बेरा आमा बगइचा के तिरे–तिर दू तीन ठन बइला गाड़ी आवत रिहिस। गाड़ी ह गजब सजे–धजे रिहिस। बइला के सिंग म चकमकी रंग लगाय, पीठ म मखमल के लादना लदाय अउ टोटा म कांसा के बड़े–बड़े घांघड़ा पहिराय। टोटा के घांघड़ा अउ पावं के घुंघरु के छमक–छमक आरो ल पाके के लइका मन दोरदिर–दोरदिर देखे बर आथे। आगू पहुंच के देखथे तेमन पाछु वाला मन ल गोहर पार के बताथे।

वाहद रे ... बरात गाड़ी आवथे ... बरात गाड़ी ...।

सबो लइका मन सकलाके एक ले सेक गोठ करथे एक झन किथे– आगू म वहिदे झांपी माड़े हे ते गाड़ी म दूलहा बइठे होही अउ वोकर संग ढेड़हा होही। दूसर लइका किथे– बीच के गाड़ी म बरतिया मन होही। वोतके बेरा ठुक ले पाछु गाड़ी ले मोहरी, निसान के आरो आथे। बाजा गाजा के आरो पाके सबो लइका मन गोहार पारके नाचे लगगे। इकर नचई–कुदई न देखके बरतिया टूरा मन घला मसतियागे। बगीचा के आमा छांव म गाड़ी ल रोक के बजनिया अउ बरतिया मन नाचे–कुदे ल लगगे। कोनो काहथे रोंगोबती बजा, कोनो काहथे पानवाला बाबू बजा। फेर लइका मन के का ए पार अउ का ओ पार, सबो पार म बिकट नाचिस।

गाड़ी बइला अउ भीड़–भड़क्का देख के बगइचा के रखवार लछमन ह घलो

आगे। रखवार ल देख के सबो झन कलेचुप ठाड़ हो जथे।

लछमन हर एक झन बरतिया कर जाके पुछिस- भइया दुलहिन के का नाव हे?.... दुलहिन के का नाम हे गा ....।

रखवार के पुछई ह बरतिया मन ल अलकरहा लागिस। आते सांठ दुलहिन के नाम काबर पुछथे। कोनो जवाब नइ दिस। मने मन सोचे काहा ले आय हव, काहां जाहा पुछे ल छोड़ के दुलहिन के नाव काबर पुछथे। अनगइहा मनखे का जानय लछमन के किस्सा ल। ओतो ओरभेट्टा म सपड़गे। फेर गांव के लइका मन जानत रिहिस ओकर आदत बेवहार ल। लछमन ह गांव म जेन भी बरात आथे-जाथे तिकर करा अइसनेच पुछथे।

सबो नइका मन हांसी उड़ात किथे- मनटोरा नाम हे मनटोरा। मनटोरा माने मन ल टोरा। अतका ल सुन के जब देखबे तब मोर हांसी उड़ाथे किके। लउड़ी ल धर के दउड़थे। थोकन दउड़ीस ताहन हफरगे। रखवार ह थथमराय आमा मेड़ म लोरहगे। लइका मन छूलंबा होगे।

लछमन ह अपन मन के पिरा ल मन म धरे उपर वाला डहर सुध लमाय आमा पेड़ म ओधगे। लछमन ल बइहा जान के बरतिया मन अपन-अपन गाड़ी चड़ के मनटोरा अउ लछमन के बिसे म आनी-बानी के बात बनावत चलदिस अपन रद्दा। येती बर लका मन भागत-भागत गांव आके लछमन अउ मनटोरा के बिसे म आनी-बानी के किस्सा गढ़हत रिथे। इकर गोठ ल सुन के बिजउ कोतवाल समझगे कि येमन फेर लछमन ल चिड़ा के आय हे। लइका मन ल समझावत कोतवाल किथे- वोला झन बिजराए करा रे, वहू बड़ पढ़े-लिखे अउ दाउ घर के लइका आए फेर का करबे ओकर मती ह कती टरक दिस हे।

नानपन म लछमन अउ सतरोहन दूनो भाइ बड़ हूसियार रिहिस। पांचवी पास करे के बाद भरोसी दाउ ह लछमन ल साहर भेज दिस पढ़े बर। दूनो लइका ल बाहिर नइ पठोवं किके सतरोहन ल गांवे के स्कूल म पढ़ाइस। लछमन ह साहर म रिके सहरिया लच्छू होगे। भरोसी दाउ करा बेरा-बेरा म चिट्ठी-पाती आवत राहय। भरोसी ह घला बेरा-बेरा म मुलाकात करे बर जात राहय।

बड़े घर के लइका, खाय-पिये के कमती नइ रिहिस। बने जिकर करके पढ़हिस अउ बने-बने काम बुता घला पा लिस। भरोसी दाउ ह लइका मन बाड़गे कइके बर बिहाव के चेत लमइस। परोसी गांव के बिसाहू के बेटी मनटोरा ल मन घलो कर डरिस। मनटोरा घला पढ़े-लिखे सगियान होगे रिहिस। दूनो दाउ बइठ के

नता जोड़ डरिस। येती लछमन ह साहर म राहत एक झन मंजु नाव के लड़की संग मया कर डरिस। दूनो एक दूसर ल नजर भर देखे। दूनो म गोठ बात होवे। मंजु अउ लच्छू के मया दिनो-दिन गढ़हावत रिहिस। एक दिन संझा बेरा लछमन अउ ओकर संगवारी मन सेकलाय रिहिस। मंजु घलो रिहिस। चपरासी ह चिट्ठी लान के दिस।

लछमन ह अपन ददा के चिट्ठी पाके तुरते खोल के पढ़हिस। ददा ह लिखे रिहिस बइसाख म तै गांव आजा, हमन तोर बिहाव मड़ा डरे हाबन। मेहा बिसाहू के नोनी मनटोरा के संग तोर रिस्ता जोड़ डारेहवं। बाकी बात गांव आके होही। आसिरवाद।

चिट्ठी पढ़ के लछमन के मन टूटगे फेर ओकर मयारु के मन म खुसी हमागे। लछमन के संगवारी मन ओकर पत्नी के नाव सुन के हांस परिस। का का नाव रिथे यार गांव म .. मनटोरा। जइसे लछमन ल लच्छू करेन ओइसने मनटोरा ल घला टोर के मनटो करे ल परही। मनटोरा माने मन ल टोरा।

अतेक मजाक ल सुन के मनटोरा नाव ले लछमन ल चिड़ होगे। अउ तुरते परन कर डरिस कि मैं भले कुवारा रहि जहूं फेर ये मनटोरा नांव के लड़की संग बिहाव नइ करवं। लछमन के मयारु मंजु ह सरम के मारे नइ बता सकिस कि मिही ह मनटोरा आवं जेकर संग तोर रिस्ता जुरे हे। लछमन ह अपन मयारु के हाथ ल धरके किथे मैं तोरे संग बिहाव करहूं। फेर घर वाला मनके बात राखे बर गांव जायच ल परही। मंजु ह घला किथे घर वाला मन के बात राखे बर जाके देख लेना एक बेर मनटोरा ल। ओतो जानत राहय कि मिही ह मनटोरा आवं अउ मुंही ल आके देखही। उहें मनटोरा अउ मंजु नाव के भरम मिटा जही।

लछमन ह कपड़-लत्ता जोर-जंगार के गांव आइस आके तुरते लड़की देखे बर निकलगे। मनटोरा घलो गांव आके घर म लछमन के अगोरा करथे। लछमन के मन म तो मनटोरा..मनटोरा नाव गुंजत रिथे। मनटोरा के घरो म नइ पहुचिस, आधा दुरिहा ले वापस आगे। आके अपन ददा कर लड़की ल नापसंद कर दिस।

भरोसा दाउ ह घलोक बड़ा जिद्दी मनखे ताय। बरपेली बिहाव के तियारी कर दिस। बाप बेटा म काहा सुनी होगे। गुस्सा-गुस्सा म लछमन ह घर छोड़ के निकलगे। भरोसा ह अबड़ खोजिस फेर नइ पाइस। गांव-गांव म बदनामी हो जही सगा-सोधर म नेवता होगे किके दूनो दाउ सुनता होइस।

उही तिथि म मनटोरा अउ सतरोहन के बिहाव कर दिस। मनटोरा ह तकदीर के फैलसा मानके सतरोहन ल अपन पति मान लिस। लछमन ल सपना समझके

भुलागे। बर-बिहाव झरे के बाद लछमन घर लहुटिस। ददा ह रिस के माने नइ बोलिस। भाई ह भाई के मया म गोठियालिस।

सतरोहन ह अपन बाई ल हांक पारिस पानी बर। मनटोरा ह लोटा म पानी धर के निकलिस। लछमन ह अपन भाई बहु के चेहरा ल देखके ठाड़ सुखागे। सांस अरहजगे। तन पथरा होगे। मनटोरा घलो आंखी फारे देखते रइगे। ओतगे बेरा ओकर ददा ह आके दूनो के परचे कराथे- बहु ये तोर कुरा ससुर आए मुड़ी ल ढांक के दुरिहा ले पांव पर ले। लछमन के मुड़ म टंगिया परगे, अपन मयारु ल छोटे भाई के बहु बने देखके। ओतका बेर ले लछमन के सुध-बुध हरागे। सुरता रिहिस त सिरिफ मनटोरा नाव। ये नाव ह लछमन ल बाय-बैरासु कस लगगे। एक नाव के पाछु अपन मयारु बरो दिस। ये नाम ल धरे लछमन ह बइहा होगे। धन-दौलत घर-दुवार कांहि के सुध नइहे। रमता जोगी होके घर दुवार ल तियाग दिस।

समरोहन अउ मनटोरा ह समाज म दाई-ददा के मान ल राखत बिधाता के लेखा मान के अपन घर संसार म रमगे। लछमन ह घर-परिवार ले दूरिहा-दूरिहा रई के बनेच दुरिहागे। दाउ के लइका होके जिहे दाना-पानी मिलथे बुता काम करत एक मुठा खात परे रिथे। ददा अउ भाई करा रितिस ह ओकर जतन पानी करतिस, फेर ओकर तो कोनो ठिकाना नइ राहत रिहिस। रमता जोगी बरोबर ए गांव ओ गांव बइहा-भूतहा कस भटकत राहय। धीरे-धीरे घरो के मन सोर-खबर ले बर छोड़ दिस। काबर कि घर ल रितिस तव अउ जादा दुख होतिस। जिहे ओकर मन सुख पावे तिहे रेहे राहय। अऊ आगू के किस्सा ल तो सरी गांव जानत हे।

कोतवाल के मुंह ले लछमन के अइसन किस्सा सुन के लइका मन मने-मन एक आसु रो डरिस। कोतवाल संग लइका मन अपन करनी के छिमा मांगे बर लछमन करा गिस। बगीचा म ओधे लछमन करा सबो लइका मन छिमा मांगिस फेर ओतो चिट-पोट काहि नइ करिस। कोतवाल ह ढकेल के हूत पारिस। लछमन के मुरदा देह पट ले भुइया म चितियागे अउ आज इही मेर लछमन अउ मनटारो के किस्सा तको सिरागे।

तीन

गांव ल तो सुनता अउ सद्भावना के ठउर केहे जाथे। नित-नियाव के आसन म बइठे गांव के सियान ह गांव भर ल सुमता के डोरी म बांधे रिथे। परेम के तुतारी ले गांव भर ल हॉकथे। कोनो ल दुख पिरा झन होवे किके गांवे म अपन मति अनुसार नियम बनाय रिथे। का अमीर का गरीब छोटे बड़े सबो ल सियान बबा ह एके लउठी म हॉके। अपन बखत म मानपुर गांव घलो सुनता अउ एकजुटता के मिसाल रिहिस, फेर का करबे सबो दिन एक बरोबर नइ राहय अब सियान ह सियाने होगे। नित-नियाव ह अब थाना कछेरी के होगे हे। गांव तिर म थाना का आगे थानादार बात-बात म गांव आ धमकथे।

दाउ ह अपन पाहरो म कभू थाना-कछेरी नइ गे रिहिस फेर का करबे जब ले नियतखोर कोतवाल अउ घूसखोर थानादार के जोड़ी भराय हे तब ले दाउ अउ गांव वाला मन ल लिखरी-लिखरी बात बर हवलदार करा खड़ा होय बर परथे। ओ दिन एक घर सास बहू के झगरा होइस परोसी ल आरो नइ लगिस। फेर चुगलाहा कोतवाल के कान म खजरी उमड़िस ते पाय के गांव भर के मन गम पागे। कोतवाल के करनी अतकेच भर नोहे। बाप बेटा के झगरा, कोनो के भइसी गवागे, कुकरी चोरी होगे, कोनो ल कुकुर चाब दिस अइसन-अइसन नान-नान बात म कोतवाल ह थाना वाला ल बलाके गांव के लोगन मन ल हलाकान करय। इही थाना कछेरी के सेती गांव के पंचइत अउ नित नियाव छिदीर-बिदीर होगे। हरेक बात म थाना आगे।

मातर के दिन के बात आए मदन अउ दया ह झगरा होइस। नसा के रोस म दूनों झन मारिक-मारा होइस। कोनो नइ छोड़ातिस त तो मुड़ी कान के फुटत ले हो जतिस। सियान मन छोड़ाइस अउ घर म ओइलइस। बिहनिया नसा उतरे के बाद

मदन अउ दया दूनों झन अपन-अपन कोती ले पंचइत सकेलिस। दाउ ल फैसला करे बर बलाइस। पंचइत सकलाय देख के कोतवाल के आंखी फुटगे। जाके तुरते थाना म गांव के पंचइत के बात ल एक ले दू करके बता दिस। थानादार ह गांव अइस अउ खून के मामला आए किके दूनों ल अंदर कर दिस। सिपाही संग भला कोन लड़तिस दाउ घलो चुप रइगे। मदन अउ दया के थाना म जाए के पाछु दूनों के घर वाला मन मिंझर के दाउ करा अपन-अपन घर वाला ल छोड़ाय के बिनती करिस। दाउ ह थाना म पइसा कउड़ी भर के दूनो झन ल छोड़ा के लानिस। एक घाव जिहां घूसखोरी के आदत परगे ते कहां छुटना हे। कोतवाल ह तो गांव म सिपाही मन के चुगलही करे बर बइठे रिहिस। उही ह खबर करे अउ दूनों कोत के पइसा झोरे।

गांव म कोतवाल के जिये खाए के पुरती कोतवाली जमीन हे तभो ले चोट्टही करके खाय बिगर ओकर पेट नइ भरे। थाना के डर म कोनो ओला कांही काहत घलो नइ रिहिस। ओकरो पारी आही त मजा बताबो किके मने मन म सबो बैर धरे राहय। दाउ घला कोतवाल के पारी के अगोरा करत रिहिस।

एक दिन बिहनिया के बेरा रिहिस गांव भर के मन अपन-अपन काम म जाए के तियारी करत रिहिस। कोनो ल कोनो से गोठियाए के फुरसद नइ रिहिस। सबो झन बुता म मगन रिहिस ओतकेच बेर कोतवाल ह रेरी पारत घर ले निकलिस। चोर... चोर... चोर...। मोर घर म चोर खुसरे हे बचावा दाई-ददा हो। मोला बचावा। चोर... चोर...। चोरहा मन मुंह म साफी बांधे कोतवाल ल मारत-पिटत ओकर घर के संदूक पेटी ल खोले लगिस। कोतवाल ह अपन घर के रूपिया पइसा ल चोरी होत देख चोर-चोर किके चिल्लावे। गांव वाला मन कोनो ओकर मदद बर आगू नइ अइस। चोरहा मन कोतवाल के घर म दंगा दासी करिस अउ चोरी करके चल दिस। कोतवाल रो-रो के गांव के मन ल करलई अकन बताय लगिस।

कोतवाल ह सबो किस्सा ल बतावथे अउ गांव वाला मन किस्सा सुने बरोबर हुकारू देवत हव-हव किके सुनथे। कोतवाल घर ओतेक अकन के चोरी होय हे तभो ले कोनो ह मया के दू भाखा नइ बोलत हे। बने बेवहार के रितिस त तिर-तखार के मन ओधतिस नियतखोर कोतवाल के चरितर के सेती दुख म घलो अपने अकेल्ला हे। उहू ह तो काकरो सुख-दुख म साथ नइ दिस त ओकरे दुख म कोन साथ दिही। कोतवाल ह पर के झमेला म जोझा परके धन कमाय रिहिस। उपराहा म चोरी लुका ले अपन कोतवाली जमीन ल घलो बेचे रिहिस। घर म बने रूपिया के सकलाती होइस अउ बिलई कस झपटती होगे। पर के ल झपटे परय तेकर सेती ओकरो झटइस।

रोवत-गावत कोतवाल थाना पहुंचिस अउ चोरी के बात ल थानादार ल बतइस। थानादार तमतमावत गांव अइस। गांव म एको मनखे नहीं। सबो अपन-अपन काम बुता म चल दे रिहिन। गांव म जइसे कुछू होयच नइये तइसे बरोबर रिहिस। देख के थानादार ल अचंभा लागिस। कोतवाल ल किथे- कइसे कोतवाल तोर घर सिरतो म चोरी होय हे। कोतवाल किथे हहो मालिक गांव भर के आगू म चोरी होय हे। गांव भर के आगू म चोरी होय हे फेर गांव म तो एको मनखे नइ दिखे। थानादार गांव के एक झन सियान ल पुछिस कइसे गा कोतवाल घर चोरी होवत रिहिस त रेहेस का। सियान किथे- कतका बेर चोरी हो गे साहेब हम तो जानबे नइ करन, ये दे तूहरे मुंह अभी सुने हन। लइका मन खेलत रिहिस तेमन ल पुछिस- तुमन देखे हव का। लइका मन किथे- चोरह घर का चोरी होही गा, लबारी मारथे। थानादार अउ कोतवाल गांव वाला मन ल पुछ-पुछ के हलाकन होगे कोतवाल घर के चोरी ल कहू जानबे नइ करे। कोतवाल के समान चोरी होगे उपर ले कोना ह बताय बर तियार नइये।

थानादार बिगर सबूत के पतियाबे नइ करिस कि ओकर घर चोरी हो हे। थानादार कोतवाल ल किहिस दू चार सौ देबे त तोर केस बनाहू। चोरहा मोर हांथ आ जही त तोर रूपिया मिल जही, नहीं ते उहू ल गवांए जान। आखिर म थानादार ह कोतवाले ल समय खराब करथस किके खिसयइस अउ उही पावं लहुटगे।

अतका बिते के बाद कोतवाल ल समझ आगे रिहिस की गांव म रइ के गांव वाला संग दोगलई करेवं तेकर फल आए किके। अपन करनी म छिमा मागे बर पंचइत सकेलिस। मानपुर म एक बेर फेर नियाव के आसन म दाउ बइठिस। सरी गांव वाला के आगु कोतवाल किहिस कि मैं लालच म पर के नाननान बात के लिगरी लगा के सबला थाना कछेरी म रगेढ़त रेहेव। अब मोला क्षमा करदवं। अइसन गलती दूबारा नइ करवं। मोर करनी के सजा तो मोला मिलगे मैं कंगला होगेव। दाउ ह कोतवाल ल अपन करनी म पछतावत देखके किहिस हमर पंचइत म काकरो संग अनियाय नइ होय।

दाउ ह मदन ल आरो करिस। मदन अउ दया ह एक ठन मोटरी लान के मढ़इस। दाउ किथे कोतवाल ले धर तोर रूपिया पइसा ल, तै सरी गांव ले बैर करेस अपन लालच बर फेर गांव के मन तोर ले नहीं तोर लालच ले बैर राखे रिहिस। गांव के सुनता टोरे बर तै का-का नइ करे होबे। अब देखे डरेस न गांव के नियाव अउ गांव के सुनता।

चार

तुलसी ह अंगना के धुर्रा ल रपोट-रपोट के परदा रुंधे। पारा भर के लोग लइका सेकला के घरघुधिंया खेले। एक झन नोनी के दाई बने एक झन बाबू के दाई। सुघ्घर पुतरी-पुतरा के बिहाव ल रचै। लइकुसहा उमर के लइकुसहा नेंग जोग। उही बरतिया उही घरतिया, उही लोकड़हिन उही बजनिया। नान-नान पोरा चुकिया म साग-भात चुरय। कमचील के मड़वा म तेल हरदी चड़य अउ भांवर परय। टूरा मन कनिहा म नंगारा बांधे। रोंगोबती अउ पानवाला बाबू गाना गा गा के गुदंग-गुदंग नाचे। ये ठट्ठा दिल्लगी के बिहाव ल देख के तुलसी के दाई हा चावंरा म बइठे-बइठे मुचुर- मुचुर हांसे।

तुलसी के दाई ह ओतके बेरा बाहिर कोति काकरो हुत पारे के आरो पाइस। तुलसी ल किथे- जा बेटी कपाट ल खोल दे, कोन चिल्लावथे। ठुकूर-ठुकूर बाहिर कोती ले ओरो मिलत हे।

तुलसी ह काहा सुनय वोतो लइका के टिकावन म मगन हे।

अपने ह कपाट ल खोलिस। दुवारी म पटइल अउ दू झन अनगइहा सगा ठाढ़हे राहय। पटइल कका अउ सगा ल भितरी म बलाइस।

तुलसी के दाई पुछिस-कइसे आय हव कका?

पटइल किथे- आए बर तो रेंगत आए हन अउ कारन ल पुछबे त मे हा तोर नोनी बर सगा लाने हवं। सगा के नाव सुन के तुलसी के दाई हा लकर-धकर मुड़ी ल ढांकिस। लोटा म पानी दिस अउ पालगी करके खटिया म बइठारिस। तुरते आगी

सुनगा के चाहा डपका डरिस। तुलसी के दाई तुलसी ल किथे- जा तो नोनी तोर ददा ल बला के आबे। घर म सगा आहे कीबे ताहन जल्दी आही। तुलसी ह नइ जाव, नइ जाव काहत रिहिस तेला जोजिया के भेजिस। अगुन-छगुन करत तुलसी ह खेत गिस अउ अपन ददा ल किथे- ददा हमर घर सगा आहे, दाई तोला बलावथे। वोकर ददा ह दिल्लगी करत किथे- तोर दाई के पेट म तो काहि नइ रिहिस कांहा के अउ नवा सगा आ जही। तुलसी किथे- ओइसना सगा नहीं ददा पटइल बबा हे न तेकरे संग दू झन सगा आहे। दाई काहत रिहिस हे मोला देखे बर आहे किके। वोतका बात सुन के वोकर ददा के मुह म लाडू हमागे खुसी के मारे काम बुता छोड़ के घर आगे।

पटइल कका ह सगा संग भेट करईस। घर दुवार ल देख के सगा कर तुलसी ल हारिस। पुरोहित करा लगन-पतरी धरा के बिहाव के मड़वा ल गाड़िस। अनबुद्धि लइका का जानय, जेन अंगना म पुतरी बिहाव के खेल खेलय उहा सिरतोन के मड़वा गड़े हे। दाई के कोरा म बइठे चार बछर के तुलसी ल बिन मुंह के गरवा बरोबर, ददा ह पांच साल के दूलहा के टोटा म आरो दिस। तुलसी के दाई ददा दूनों कनियादान के धरम करके पुन कमा डरिस। लइका मन नान-नान रिहिस ते पाय के गवन नइ कराइस।

तुलसी बर तो ओकर बिहाव ह घला खेलवना रिहिस। अपन उही अंगना के घरघुंधिया म बाहा भर चुरी पहिरे सोहागिन के सिंगार सजाए रिहिस। दू चार दिन म बिहतरा लाडू सिरागे, सगा सोधर अधियागे। बर-बिहाव बने रकम ले निपटगे।

फेर तुलसी के अंगना कभु सुन्ना रइबे नइ करय। रोज स्कूल ले आवे ताहन सबो सहेली सकलाके फुगड़ी, गोटा, बिल्लस म रमे राहय। धीरे-धीरे तुलसी ह सगियान होत गिस, खेलई-कुदई छुटत गीस अउ पढ़ई-लिखई म मन रमत गीस। तुलसी ह चंचल अऊ पढ़ई म गजब हूसियार रिहिस।

पांचवी म अउवल आईस तभो ओकर ददा ह छटवीं म भरती नइ करइस। नोनी जात मन कतेक पढ़ही-लिखही किके ओकर दाई घला किहिस। अब तो तुलसी के पढ़ई छुटगे। चलचला बरन तुलसी ह थोर बहुत अपन दाई संग काम बुता करन लागे।

बारा बछर के तुलसी ह दाई-ददा ल बोझा लगे लागिस। सोचे लागिस सगा घर जाके गवन पठौनी मड़ा देतेन ते हमरो मुड़ ले बोझा उतर जतिस। तुलसी के ददा

ह सगा घर जाए के सोचते रिहिस वोतके बेरा ठुक ले समधी गांव के संदेसिया आगे। संदेसिया किथे- तुहर सगा उपर बिपदा आए हे तुमन ल खत्ता म बलाए हे। तुलसी के ददा ह संदेसिया सो पुछिस का होगे, का बाते तेमा अतेक बिहनिया ले समधी के बलावा आगे। संदेसिया ह अपन तिर बला के सबे बात ल बताईस। तुलसी के ददा ह सुन के दंग री गे।

समधी के संदेस ल पाके तुरते संदेसिया संग रवाना होगे। माटी पानी के किरिया करम ल निपटा के संझाकुन धर लहुटिस। रोनमुहा थोथना ल देख के तुलसी के दाई पुछिस- का होग हो, कोनो अलहन आगे तइसे लागथे।

तुलसी के ददा किथे- हमर दमांद अब नइ रिहिस, बेटी के घर बसे के पहिली उजरगे। दाई-ददा दूनों अपन बेटी के बिगड़े भाग ल देख के मुड़ी धरे रोवथे। तुलसी ह घर अइस त ओकर दाई हाथ ल धर के ओकर हांथ के लाली चूरी ल चरचिर ले कूचर दिस।

दाई ह दमांद बर रोवथे, ददा ह बेटी के भाग म अउ तुलसी ह अपन हाथ के चूरी बर रोवथे।

तुलसी ल समझावत महतारी ह आज वोकर बिहाव के बात ल बतावत किथे- हमन तोर नानपन म बिहाव कर दे रेहेन, मोर नानपन के सोहागिन बेटी आज तोर सुहाग उजरगे तै राड़ी होगेस। ददा ह धिरज धरोवत काहय- आज ले तै दूसर लइका मन कस चूरी-चाकी टिकली माहुर झन लगाबे। सोलह सिंगार के सातो रंग तोर बर सादा कारी होगे।

तुलसी किथे जेन बिहाव ल जानव नहीं तेला मैं मानव नही। बिहाव के सुख ल देखे नइहवं अउ राड़ी के पिरा धरावत हव। तुलसी ह नइ मानिस। अपन जिद म अड़े दू दिन चूरी-चाकी पहिर के गांव म किंजर दिस गांव भर हो हल्ला होगे। राड़ी टूरी ह मटमट ले संभर के किंजरथे अउ दाई-ददा के नाक कटावथे। फलानी के टूरी ह चूरी नइ उतारे हे कइके गांव म बइठका सकलागे।

तुलसी ल तो काकरो डर नइहे फेर दाई-ददा ल समाज के डर हे। गांव के बइठका म तुलसी के ददा के मुड़ी ह नवे हे फेर तुलसी ल अपन उपर गरब हे। गांव के मन तुलसी के बाप ल खड़ा करा के पुछथे कइसे गा तोर नोनी ह राड़ी होगे हाबे तभो ले ओकर हांथ के चूरी-चाकी ल नइ उतारे हस। तोर नोनी ह कुवारी नोनी मन

बरोबर चूरी-चाकी टिकली फुंदरी लगाय गांव-गली म किंजर-फिरत रिथे। तोर नोनी के देखा सिखी अइसन-अइसने हमर गांव के नित-नियाव बिगड़ही। तुलसी के ददा ह चिट पोट नइ करिस। गांव वाले मन अपन-अपन ले तुलसी के ददा उपर गुसियाए परे। तब तुलसी ह बइठका म खड़ा होइस। बेटी ह बाप के मजबूरी ल समझिस अउ चार गंगा ले जवाब ल मांगिस- काहा गे रिहिस तूहर समाज ह जब मोर नानपन म बिहाव होइस ? ओ दिन काबर ये बताए बर नइ आयेव कि नानपन म बिहाव झन कर। आज राड़ी होगेव त मोर चूरी उतारे बर चार समाज जुरियागेव।

अतका ल सुन के सबो सियान के मुंह खिलागे। एकक करके सबो सियान मन तुलसी के गोठ ल सुन के किहिस के बेटी तुलसी बने बात ल काहत हे। गलती हमी मन करथन भोगथे नोनी-बाबू मन। गांव के दूसर नोनी मन तको तुलसी के बात के साहमत करिन। सबो सियान के मुड़ी नवगे तब तुलसी किहिस कहू तुहर म थोरको सरम बांचे हे त इही चार गंगा म किरीय खाव कि अब ले काकरो नानपन म बिहाव नइ करन अउ न करन देवन। अपन-अपन बेटी मन ल घलो बेटा बरोबर पढ़ा-लिखा के साक्षर बनाहू। कहु तुमन अइसन किरिया खाए बर तियार हव त महू अपन हाथ के चूरी ल कूचरे बर तियार हवं। दाई-ददा ल अपन करनी के पहिलीच ले पछतावा रिहिस। अब गांव वाला मन के घलो आंखी उघरगे। सबो झन मिल के लोटा म गंगा जल धरके किरिया खाइन।

तुलसी हा घलो खुसी के आसू छलकात अपन हाथ के चूरी कूचरे बर दूनो हाथ ल उठाइस। ओतके बेरा गांव के सियान मन चिल्ला उठिस- ठैर जा बेटी, तै अपन हाथ के लाली चूरी ल झन कूचर। होनी ल तो कोनो नइ टारे सके। जवइहा तो चल दिस, तोर जिनगी रोवत काबर कटय नोनी। गांव भर के तै सियानीन बेटी अस। जा पढ़-लिख के अपन जिनगी बना हम सब तोर संग हन।

पांच

अकोली वाला मन के नांगर फंदावे त चइतराम ह आधा अक्कड़ ल जोत के ठाड़हे राहय। घर के खेती होवे चाहे पर के बनि चइतराम ह अइनेच कमाथे। तेकरे सेती तो जे नही ते वोला काम म बलाथे। अकोली गांव म चइतराम ह अपन दू झन भाई ल धर के आय रिहिस। वो समे ओकर गांव घर न खार म खेत। भइगे लोटा अउ थारी धरके आय रिहिस।

गांव के बड़का सियान मन घर बनि-भुती करके नानकुन कुरिया ल बना डारे हे। किथे न कमइया बर काम के कमी नइये तइसने चइतराम बर गांव म काम के दुकाल नइहे। चइतराम अपन दूनो भाई इसवर अउ सेवक संग जूर मिलके बनि-भुति करके पेट रोजी चलावथे। तीनों भाई म इसवर ह दू कलास पढ़े रिहिस ते पाय के कमई के हिसाब-किताब उही ह राखे। इकर कमई ल देख के कोनो ह बइमानी घलो नइ करत रिहिस। जतका दिन कमाय राहय तेकर ले दू आना उपराहाच देवे।

बनि के थोर-थोर पइसा सकेल-सकेल के परिया भुइया ल बिसावत गीन। गांव के सियान मन किथे चइतराम अब तो तुहर गांव म घर होगे अउ खार म खेत घला होगे त तीनों झन बर बिहा कर डरतेव। चइतराम किथे बात तो रिसतोन किथव ददा फेर तूहर साहमत के बिना मे काय कर सकथव। मोर तो दाई-ददा कोनो नइहे जेन मन हमर बर बिहा के सरेखा करतिन। अतका ल सून के गांव के दाउ दरागा मन अगवा बन के तीनों भाई के बर बिहाव कर दिन। बने मनखे के सबे ह बने

होथे। कमई के परसादे घर के परिस्थिती सुधरे लगिस। तीनों भाई ह पर के बनि ले छुट के अपन बिसाय परिया ल सोझियावय। रोज थोक-थोक कमा-कमा के बन बुटा ले छबाय परिया ल धनहा खेत बना डरिस। मेहनत के बिरवा ह दुच्छा नइ जाय फर धरबे करथे। चइतराम इसवर अउ सेवक के मेहनत घला फर धरिस। धीरे-धीरे तीनों भाई तीस अक्कड़ के जोतनदार होगे। घर परिवार ह मेहनत के भरोसा सुधरगे।

अब तो पर घर बनि करे ल घलो नइ जाय। घरे ले बेरा नइ उसरे त काहा बनि म जाही। सबो के लोग लइका बाड़गे। नानकुन कुरिया ले अब बड़का घर बियारा अउ परासर होगे। गांव म अब कोनो ओला बिचारा गरीब नइ काहय। अब ओकर घर अइसन समे हे कि उही ह चार झन बनिहार ल चला लिही। फेर इकर मन म धन के थोरको गरब गुमान नइहे। आजो वोइसने जिनगी जियथे जइसन गरीब रिहिसे त जियत रिहिस।

कनकी के पेज म अम्मारी के साग जेला तीन बेर पुरो के तीनों भाई खाय। आज वइसन दिन तो नइहे फेर आदत ह नइ छूटे हे। खाय के बेरा, कमाय के बेरा संघरे सकलाके गोठ बात करत खाय। अकोली गांव म चइतराम इसवर अउ सेवक के गजब नाम होगे। अब तो तीनों झन अपन लइका मन ल घलो खेत लेगय। चइतराम किथे बनिहार के लइका खेती के बुता नइ सिखही त काय काम के। नांगर के पाछु-पाछु लइका मन ल रेंगावत किस्सा कहानी सुनावत राहय।

थोरके म लइका मन घलो नांगर के पाड़की ल थामहे लगगे। देखइया मन किथे देख लइका मन घला दाई-ददा कस कमइया निकलही। किथे न जइसन-जइसन घर दुवार तइसन-तइसन फइरका अउ जइसन-जइसन दाई-ददा तइसन-तइसन लइका। रमगे टूरा मन घला खेती म। ददा के संगे संग मूड़ भर के बइला ल बिता भर के टूरा ह नाथ डरिस। जमहेड़ के गाड़ा म फांदीस अउ हकन के तुतारी मारिस। होर .... होर .... काहते हे बइला ह गाड़ा सुद्धा घुरवा म उतरगे।

नेवरिया गड़हा कतेक कासड़ा ल तिरतीस। थामहे नइ सकिस। चइतराम ह धकर लकर बइला ल ढिलिस अउ दू चार झन बला के गाड़ी ल घुरवा ले बाहिर निकालिस। टूरा मन डर्रावत रिहिस ददा ह खिसीयाही किके। फेर चइतराम ह गुसियाय ल छोड़ मने मन मगन होगे। किथे किसान घर के लइका गाड़ा ल बइला

संग नइ खेलही त का फुग्गा घुनघुना ल खेलही। ओ दिन ले लइका मन के बल अउ बाड़गे।

एक दिन इसवर ह गांव के सब लइका मन ल इसकूल जात देखिस। ओकरो मन होइस कि मोरो घर के लइका मन पढ़तिस-लिखतिस। घर जाके लइका मन ल किथे काली ले तहू मन इसकूल जाहा रे। अतका ल सुनके टूरा मन अपन-अपन ले नइ जान नइ जान किके टरक दिस। इसवर ह दू कलास पढ़े रिहिस ते पाय के अपन टूरा ल पढ़ाय के साध मरिस। फेर ओकर टूरा पुनीत के थोरको पढ़े के मन नइ रिहिस। तभो ले बरपेली इसकूल म नाम लिखा दिस। नइ जाव काहे तेला मारपीट के पठोवे। चइतराम अउ सेवक ह अपन टूरा मन ल जादा नइ बरजिस। काबर कि जोर जबरदस्ती ले लइका ह बिगड़ जथे। इसवर ल घला कि बरजिस लइका उपर जोझा झन पार किके।

इसवर नइ मानिस अउ अपन टूरा पुनित ल परसदा के इसकूल म भरती करा दिस। ओ समे अकोली ह नानकुन बस्ती रिहिस ते पाय के गांव म इसकूल नइ रिहिस। गांव के सब लइका मन पढ़े बर परसदा जाय। सड़क नइ रिहिस पैडगरी रद्दा म रेंगत जाय ल परे। सुक्खा दिन म तो बन जए फेर पानी बादर के दिन म माड़ी भर चिखला ल नाहकत जाए ल परे। इसवर ल पढ़ई ले गजब लगाव रिहिस इही पाए के अपन सपना ल अपन टूरा पुनित म देखे।

पुनित ह पढ़-लिख के हूसियार हो जही त हमर चीज बस के हिसाब-किताब राखही। हमू मन ल थोर बहुत अकछर के गियान कराही किके आस राखे रिहिस। पुनित ह बिहनिया ले नहा-खोर के खा डरय। पढ़े बर जाही किके कोनो वोला काम घला नइ तियारत रिहिस। कमइया मन ले आगु वोला खाय बर देवय। पाछू बाकी कमइया मन खाके खेत जावे। पुनित ह झोला म एक ठन रोटी लूका के धरे राहय। एक ठन अंगाकर वोकर दाई ह अउ धरा दिस। अइसने रोज पुनित ह खात पियत बेरा म आवे बेरा म जावे। इसवर ल गजब गुमान होगे अपन बेटा उपर काबर कि अब चेत लगा के इसकूल जाय बर धर लेहे। चइतराम अउ सेवक ल घला भरोसा होगे। पढ़-लिख के बने चीज बस के सरेखा कर लिही किके।

पुनित ह सबो के पंदउली पाके अऊ छानी म चड़गे। घर ले तो रोज निकले इसकूल बर फेर कोनो दिन जाय कोन दिन नइ जाए। नइ जाय तेन दिन परसार म

बइठ के अंगाकर रोटी ल खा लय अउ छुट्टी के बेरा घर आ जए। इसवर ल थोरको गम नइ रिहिस। लेदे के टूरा ह आठवीं पास होगे। चइतराम ल पुनित उपर भरोसा अऊ बाड़गे। उही भरोसा म पुनित ल तारा कुची धरा दिस। हूसियार के लइका डेढ़ हूसियार होगे। इसकूल जावथवं कइके निकलथे अउ परसार म जाके जुवां-चित्ती म रम जथे।

पुनित के हाथ म तो तिजउरी के चाबी राहय। जतका पइसा चाहे ततका निकाले अउ जुवां म उड़ा दय। चार आना आठ आना के दाव ह आठ रुपिया दस रुपिया के होगे। अब तो पुनित के इसकूल जवइ बिलकुल बंद होगे अउ ओकर संगे-संग तीन झन अउ टूरा मन के घलो बंद होगे। परसदा के मास्टर ह एक दिन इकर मन के सिकायत करे बर अकोली अइस। गुरुजी किथे तूमन अपन लइका मन इसकूल काबर नइ भेजव। चार महीना ले गैर हाजिर हे। अतका ल सून के गांव के सियान मन किथे टूरा मन तो रोजे इसकूल जाथन किके घर ले निकथे फेर कोन जनी काहा जाके बिलमथे। गुरुजी किथे नहीं भई इसकूल आबे नइ करे। आधा बीच ले बइठ के घर आ जात होही।

इसकूल के बहाना टूरा मन काहा जाथे किके एक दिन सियान मन पासथे। टूरा मन इसकूल जाय बर घर ले निकलथे। पाछु-पाछु यहू मन निकलथे। पुनित अउ ओकर संगवारी मन परसदा के इसकूल जाय ल छोड़के गांव के पिछोत के परसार म खुसर जथे। उहा लुका के कोनो माखुर गठत कोनो बिड़ी सुलगावत अपन अपन बसतर ल फेक दिस। एक झन टूरा ह अपन थइली ले तास पत्ता निकालिस अउ चारो झन बर बांटिस। जइसे दांव लगाय बर पइसा निकालिस ठुक ले चइतराम मन पहुंचगे। किथे कस रे इही तूहर इसकूल ए अउ ए काय पढ़थव। सियान मन ल देख के सबे झन सुकुड़दुम होगे।

अपन-अपन टूरा मन ला नंगत ठठावत घर डहर लानिस। पुनित ल घलो चइतराम ह चार चटकन हनिस अउ तिरत घर कोति लेगिस। घर म आगे चइतराम किथे ये टूरा के करनी ले मोर तन बदन म आगी बरगे। पछीना ओगार के कमाय धन ल लूटाही त दुख ता लगबे करही। चइतराम किथे सबके तो पछीना के कमई आए फेर मोर खून के कमाइ ये। येला ते हा परसार म जुवां खेल के लूटावथस।

तोर नामे भर पुनित ए करम ले तो ते कुल के कलंख अस। पुनित तैतो

परसार के गउंदन अस। घर म राखबे त घर बस्साही दुवार म राखबे त दुवार। जानवर घला तोला नइ सुंखे तइसन घर भर म तोर नियत बस्सागे। अपन टूरा के अतेक गारी बखाना ल इसवर ह सहे नइ सकिस। पुनित डहर बोले ल धर लिस। इसवर किथे- भइया तोरे भर कमई नोहे मोरो कमई के आए। तै लहू गंवाय हस त महू तो गवाय हवं। मोर लइका तोर बर कलंख होगे। इही तोर अउ मोर के तनीतना म झगरा बाड़गे। झगरा ह बाटा हिसा म आगे। तीनों भाई अपन-अपन चूलहा अलगा डरिस।

बाटा हिस्सा के बाद तको पुनित के बेवहार ह नइ बदलिस। अपन बाप के मेहनत के कमई ल जुवां म उड़ाय ल नइ छोड़िस। बाप ये तभो ले के दिन ले सइही आजे सुधरही काले सुधरही कइके मन ल मड़ावथे। पुनित ह दिनो-दिन अउ बिगड़त जात हे। जुवां ले गांजा दारु म उतरगे। घर म रोज रुपिया बर झगरा करे। नइ देवय त मार पीट के नंगा लेवे। इसवर ह अब अपने लइका के दुख रोवे। भाई मन का कितीस वोमन तो परोसी होगे रिहिस। कलेचुप बाप बेटा के झगरा ल देखे।

हरेली तिहार के दिन चइतराम अउ सेवक अपन-अपन नांगर बक्खर के पूजा करे बर धोवत-मांजत रिहिस। इसवर घला तरिया म लेग के नांगर ल धोइस। गांव बर हरेली तिहार बड़ खुसयाली के परब आय। अपन-अपन खेती के औजार ल सुमरे के दिन आय। एकरे परसादे तो खेती किसानी के बुता सिरजथे। सबो औजार ल अंगना म मड़ाके पिसान के हाथा देवथे। बंदन के टिका लगावथे। माई-पिला जुरियाके आरती उतारथे। तीनो भाई ह अपन आगू के दिन ल सोरियवथे। सुनता अउ परेम के दिन ह सुरता आवथे। लइका के झगरा के सेती का ले का होगे। इसवर ह पुनित के दुख म बने ढंग ले तिहार नइ मनावथे।

पूजा करे के बाद पुनित ह मनमाड़े पीये हे अऊ पीये बर पइसा मांगे ल आगे। इसवर पइसा नइ दिस त अंगना म माड़े नांगर बक्खर अउ रापा कुदारी मन ल देख डरिस। पुनित ल कुदारी ल उठा के किथे आज इही ल बेच के दारु पीहू। हरेली तिहार के कुदारी ल बेचे बर धर लिस ये हा इसवर ल साहन नइ होइस। कुदारी ल छोड़ावत किथे मेहा इही रापा कुदारी म रात दिन मेहनत करके घर दुवार खेती खर बनायेवं अउ तै ह येला बेचे बर लेगाथावस। पुनित एक नइ सुनिस हाथ ल झटकार के घर ले निकलगे।

कुल के कलंख के पाप ह हद ले बाहिर होगे। इसवर ह मार आंखी ललियाए पुनित के पाछु-पाछु परसार कोति दउड़िस दिस। कुदारी धरे पुनित अउ इसवर के बज्र झगरा होगे। मारिक मारा, पटकिक पटका। तिहार के दिन सुनसान बियारा कोनो छोड़इया नइ रिहिस। पुनित अउ इसवर दूनो झन जोर दार किकियइस। ताहन भइगे अनहोनी ह होगे। इसवर ह अपन टूरा ल उही परसार के गउदन म मुसेट परिस। आज अइसन दिन आगे इसवर करा कि गांव भर के गउंदन पुनित के नाव मेट परिस।

इसवर अपन करम म कठल के रोइस। राम लखन बरोबर अपन भाई मन करा जाके छिमा मांगिस। किहिस मोरे सेती हमर चुलहा अलहाय रिहिस। घर के बाटा होय रिहिस। इसवर किथे भइया मोर लइका ह तो उही दिन मोर हाथ ले निकलगे रिहिस अउ आज मोरे हाथ ले ये दुनिया ले निकलगे। चइतराम किथे यें का किथस इसवर। हा भइया आज पुनित मोर हाथ ले ये दुनिया ले निकलगे। अतका ल सुन के चइतराम अउ सेवक ह तीनो भाई दुख के बेरा म फेर जुरियगे। अपन मन के रिस भुलागे। चइतराम किथे ते ये काय कर डरेस भाई। अपने लहू ल बोहा के आगेस।

चइतराम अउ सेवक धकर-लकर परसार म गिस उहां पुनित लहू-लहू म नहाय परे राहय, नारी ल टमड़के देखिस त संसा चलत रिहिस। तीनों भाई के सुनता अउ जिकर करे ले पुनित के जीव बांचगे। अब पुनित के नवा जनम ह घर ल मिंझारे के ओखी होइस। तीनों भाई पुनित के बने रकम ले इलाज पानी करवईस। चार महीना के गे ले पुनित म टाहल-टुहूल करे के लइक होगे। गरहन के अंधियारी के बाद फेर पुन्नी के अंजोर सहि पुनित बने रद्दा म आगे। फेर कारी रात बरोबर हरेली के दिन अउ परसार के गउंदन ल अकोली गांव अउ चइतराम, सेवक, इसवर ल जीवन भर सुरता रही।

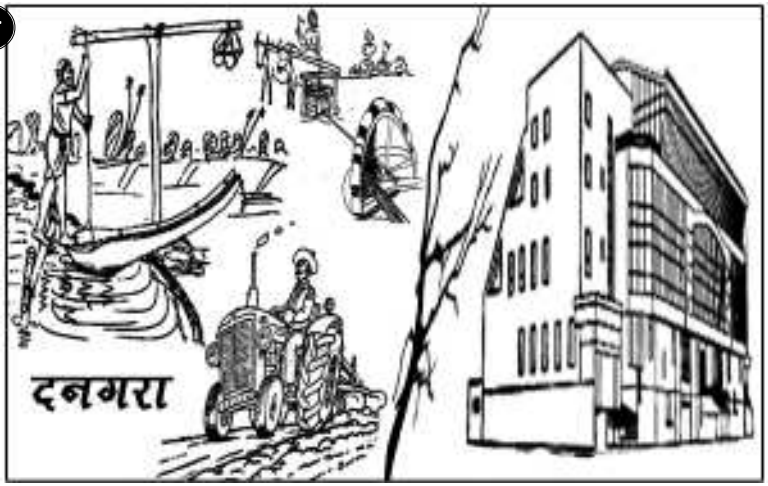

बोरिया बांधा के उलट म बसे हे मनियारी गांव ह। इहा के लोगन मन दिन भर खेती किसानी म रमे रिथे। गांव के चारो मुड़ा उपजाऊ माटी हे ते पाय के सबो करा खेती-खार सपुरन रिहिस। किसानी के छोड़ कोनो दूसर बुता म कोनो नइ जात रिहिस। बोरिया बांधा के सेती मनियारी म कभू सुक्खा नइ परत रिहिस। तिर तखार के मन ऊहा के भुइया ल सोनहा काहय।

मनियारी म चइतु अउ चैनु नाव के दू भाई रिहिन। गांव के मन उकरे रद्दा म रेंग के किसानी के काम ल करे। दोनो भाई म चइतु ह जादा सियानी करय। चैनु ह भाई संग बुता म जावे जरूर फेर थोकन अललहा रिहिस। खातु-कचरा लेवई, दवा-पानी छिचई चैनु ल बने ओल्हावे नांगर धरे के पारी म एकाध हरिया जोते ताहन घाम लागथे भईया किके मेड़ म जाके सुत जाय। दोनो भाई के बटवारा होगे रिहिस तभो ले दोनो ह एक दूसर के काम म बरोबर मदद करे।

एक दिन दोनो भाई बियासी नांगर फांदे रिहिस। एक ठन खेत ल बियासिस ताहन थक गेव किके मेड़ म जाके सुतगे। अइसन सुतई सुतिस की निंद रट्ठा के परगे। चइतु ह जगाये बर गिस त चैनु ह निंद म बड़बड़ावत राहय। ये टूरा ह सपनावत होही किके जगाबे नइ करिस। चैनु ह सुते-सुते देखत हे कि- चइतु ह बियासी के नांगर ल ढील के बांधा के पारे-पार घर आवत रिहिस। खांध म बियासी नांगर हाथ म तुतारी अउ बाही म खुमरी ल ओरमाय रिहिस। चइतु के बांधा ले उतरती होइस अउ ठुक ले ओती ले दू झन सहरिया के आति होइस। सहरिया ह चइतु ल रोकत किथे ये मिस्टर सुनो। आरो सुन के चइतु ठाढ़ होइस अउ पुछिस का

होगे जी। सहरिया किथे- ''तुम्हारे पास कितनी जमीन है, हम लोग प्रापर्टी डीलर हैं। प्लाट देखने आये हैं।'' चइतु किथे- ''इहां काकरो करा जमीन नइये। सबो के खेती हे जेमा फसल उगा के अपन जीवका चलाथन। जमीन ल हमन काय करबो साहेब।'' अतका ल सुन के एक झन सहरिया किथे अरे वही खेत ही तो जमीन हैं। दूसरा सहरिया ह चइतु ल बेसमझी जानके अपन संगवारी ल किथे चलो यार गांव चलो इसके समझ से बाहर है, किसी और से मिलते है।

चइतु के गांव पहुंचे के पहिलीच दोनो झन सहरिया मन गांव पहुंच गे रिहिस। गांव के मड़ई चवंरा म बइठे दोनो झन गांव के मन ल सकेल के खेती-खार के दाम बतावत रिहिस। बेचे बर गेलौली करत रिहिस किथे- ''इस जमीन पर हम मकान बनना चाहते है। और तुम लोगों को इतना पैसा देंगे जितना तुमने सपने में भी नहीं सोचा होगा''। अतका ल सुन के चैनु ह किथे- ''सपना म यहू नइ सोचे रेहेन कि हम अपन खेती ल बेचबो''। सहरिया किथे एक बार फिर सोच लो आखिर कितना कमाते हो उन जमीनों से। अपना जीवन तो देखो आज भी वही के वही हो। जमीन बेचो और अपना जिंदगी बनाओ। अतका म चैनु के बड़े भाई चइतु आगे। चइतु ह सहरी मन के चाल ल समझगे। ओमन ह गांव के मन ल बहला फुसला के ओकर मन के खेत ल खरीदना चाहत हे। जमीन बयपारी ह गांव वाला मन ल गजब लालच दिये के कोसिस करिस फेर चइतु अउ चैनु दूनो भाई करा हर बात के जवाब रिहिस। गांव के मन कोनो उंकर झांसा म नइ अइस।

सहरिया मन निरास जरूर होइस लेकिन ना उम्मीद नइ होइस। काबर की ये दुनिया म पइसा ह अइसन चीज आए जेकर बदौलत कुछू भी करे जा सकथे। सहरिया मन के जाय के बाद सबो गांव वाला मन अपन-अपन बुता म चल दिस। चइतु अउ चैनु दूनो भाई ह सापर म कमाय। गांव म सबे झन खेती खार वाला किसान रिहिस ते पाय के बनिहार भुतियार नइ मिलत रिहिस। सापर म कमा के एक दूसर के काम ल समे म पुरा कर लेवय। चइतु के खेत म बियासी के नांगर चलत रिहिस। खेत ह डबरा म हे ते पाय के पानी ह माड़ी भर भरे रिहिस। लसरंग-लसरंग रेंगत-रेंगत भइसा के गोड़ ह जझरंग ले दनगरा म बोजागे। दूनो भाई धकर-लगर नांगर के जुड़ा ल छोरिस अउ भइसा ल दनगरा ले खिचे लगगे। भइसा तो जी ले जांगर गरू रिथे। दू झन म टस ले मस नइ होइस। चैनु ह मेड़ मे चड़ के आरो लगइस त तिर तखार के नंगरिहा मन दऊड़ के अइस अउ भइसा ल दनगरा ले निकलिस।

चइतु के खेत म चैनु के भइसा बोजाय रिहिस ते पाय के फेर बियासे के मन नइ होइस अउ वोतकेच बेरा नांगर ल ढील के घर आगे। अनहोनी ल कानो नइ जाने फेर गोठयइया के मुंह ल कोन तोपय। गांव म इहीच गोठ होवय की चइतु के खेत म चैनु के भइसा बोजागे रिहिस। लेदे के बांचे हे। चइतु ह बाटा म पाये हे ते खेत म बड़े-बड़े दनगरा हने रिथे। जे झन मनखे ते ठन गोठ। कोनो काहाथे चैनु ह चिन-चिन के बने-बने खेत पोगराय हे तेकरे फल आय। दूसर मन कांही काहय फेर भाई-भाई के बने बनत रिहिस। चइतु ह भइसा के गोड़ ल सारे बर अपन घर ले बिजली तेल धरके चैनु घर अइस। तात पानी म बने गोड़ ल धोके बिजली तेल म सारिस। भइसा के गोड़ ल बनेच मार परे रिहिस। खोरा-खोरा के रेंगय।

एती बर सहरिया बयपारी मन घेरी बेरी गांव के चक्कर काटत राहय। ओमन इही अगोरा म रिहिस की कोनो भी एका झन ओकर फांदा म आ जाय ताहन पुरा गांव ल लपेट लेबो। बोरिया बांधा म खड़े चारो मुड़ा के डोली ल देखत रिहिस। वोतके बेरा चैनु ह अपन भइसा ल चरे बर बांधा म छोड़ के गिस। चैनु ह सहरिया मन ल नइ देख पइस। फेर सहरिया मन ह तो चैनु ल एक नजर म चिन डरिस।

ओकर जाए के पाछु सहरिया मन उही गांव के दूसर किसान ल पुछथे- 'कैसे आज ये लोग हल नहीं चला रहे हैं, और इसका जानवर कैसे लंगड़ा रहा है।' किसान ह किथे - 'काली इनका भइसा दनगरा म खुसर गया था। येकरे सेती खोरा रहा।' सहरिया किथे क्या दनगरा। दनगरा माने खेत भीतर चेर बड़े-बड़े हनियाए रहिता है न उही को दनगरा कहता है। सहरिया मन चेर ल घलो नइ समझ पाइस तब किसान किथे- दरार जानथव, दरार... । सहरिया- हां हां दरार।

दरार शब्द सुन के सहरिया मन के अक्कल तेरवा म चड़ जथे। किसान करा पुरा बात फरिहा के पुछिस। किसान ह जइसे वो जगा ले हटिस ये मन अपन बुता ल बना लिस। चइतु के खेत के धान ल मता दिस। खेत म भइसा ल कुदा-कुदा के पुरा फसल के नास कर करके चुपे चुप भागगे। चइतु ह जब अपन खेत ल देखिस त माथा धर के बइठगे। इही बात म दूनों भाई म तना तनी होगे। भाई-भाई के परेम म दनगरा हनागे। गोठ बात बंद होगे। सापर के काम घलो छटियागे।

इही उखी ल तो बयपारी मन खोजत रिहिस। कब दूनो भाई के जोड़ी फुटय त हमर भुता बनवय। चैनु ले अलगा के चइतु ह खेती-किसानी के बुता ले चिचियागे। मौका पाके सहरिया मन ओला अपन फांदा म फसो लिस। चइतु ह अपन खेती ल बेच के अंते राज म गजब अकन खेत, बाड़ा, टेक्टर, मोटर सबो ले

डरिस। अब तो चइतु ह गांव म दमदम-दमदम मोटर म आथे मोटर म जाथे। चार अक्कड़ ल बेच के, चालिस अक्कड़ बीसा डरिस तेकर अलगेच ठाठ-बाठ रिथे।

जेन चइतु ह खेत ल जमीन केहे बर तियार नइ रिहिस आज उही ह बयपारी करा खेत के सौदा कर डरिस। खेत ल बेच के चइतु ह दनगरा म बोजाय ले बांचगे। चइतुच का अब तो कोनो नइ बोजावे। चइतु के ठाठ-बाठ ल देख के गांव के दूसरो किसान मन अपन-अपन खेत ल बयपारी करा बेच डरिस। धनहा खेती ल पलाट बनाके बयपारी ह सदा बर दनगरा ल पाट दिस। चइतु ह जब अपन खेत बेचिस त चैनु ह गजब सझाइस कि खेत तो कहु भी जाके बिसा लेबो फेर का जेन माटी ह हमर पुरखा के पछीना पीये हे, जांगर टोर मेहनत के गवाही हे वोला बरो के फेर नइ बीसा सकन। तुमन ल पुरखा के चिनहा बर सोक नइ होही फेर मोला हे। चैनु किथे भइया तै भले खेती ल जमीन कहे के सुरू कर दे होबे फेर हम आजो अपन बात म अटल हन। चैनु के बात कोनो नइ सुनिस अउ चइतु सहि एकक करके गांव के गांव बेचागे।

जेन भुइया ह अन्न उपजत रिहिस उहा अब माहल खड़ा होवथे। बाहिर-बाहिर के मनखे मन आके गांव वाले मन के पुरखा के हाड़ा म नेव धर के घर बनावथे। गांव के लोगन मन अपन पुरखौती चिनहा के सरेखा करे ल छोड़के अन्ते-अन्ते जाके बसत हे। चैनु ह गांव के उपजाऊ माटी म ईटा पथरा के अटरिया बनत देख के गोहार पार के किथे- अरे इही माटी म सोनहा धान लहरावत रिहिस। ए करा मोर भाई चइतु के खेत रिहिस। ओकर खाल्हे म बरातु के खेत रिहिस। ये कोती ले नाहर पानी आवे। हमन दसरू के खेत ले टार चला के पानी पलोवन। चैनु ह गोहार पारत-पारत झकना के उठिस अउ चिचयावत किथे- तुमन तो पुरखा के चिनहा मेट के, सबके नाव भुता देव।

अतका आरो ल पाके चइतु ह नागर ल छोड़ के मेड़ म सुते चैनु ल जगावत किथे- का सपनावत हस रे चैनु। मार गोहार पार-पार के चिचियावत हस। चैनु के निंद उमचगे। एक नजर चारो मुड़ा के खेती-खार ल देखिस अउ भगवान ले बिनती करिस कि हे धरती भईया मोर ये सपना ह कभू सिरतोन झन होवे। सदा खेती खार अइसने बने राहय। चइतु किथे का सपनावत रेहे चैनु। बात ल टरकावत चैनु किथे कुछू नही भइया ले जा भाई थोकन सुरता ले मैं अतका ल बियास देथवं। थोरके दू चार भांवर रेंगइस ताहन मुंधियार होगे अउ दूनो झन घर अपन-अपन आगे।

सात

फूफू के लिगरी म सातो ह भाई मन करा बांटा मांगे बर उमियागे। पंचइत सकेल के अपन ददा के जहिजाद म हिसा मांगिस। नित नियाव म लड़के सातो ह अपन ददा के जहिजाद म हिसा पा लिस। फेर बपरी के जीयत भर बर मइके के मया छुटगे। आगी लगे अइसन नियाव म जोन मया ल टोरथे। कीरा परय ऊकर मति म जेमन धन के पाछु मया जोरथे।

बिहाव के पाछु बेटी-माई ल मइके ले एक लोटा पानी के आस रइथे। तीजा पोरा अउ मातर मड़ई म नेवता हिकारी के अगोरा रइथे। तथे तो मइके के कुकुर ल घलो ससुरार म भाई बरोबर मान गवन करथे। सातो ह मुहांटी म बइठे-बइठे अपन तीजा लेवइया के अगोरा करत बइठे हे। येहु साल आए के आस तो नइ हे फेर का करबे सातो के मन मानबे नइ करय।

अपन दुवार म बइठे सातो ह सबो के लेगईया ल आवत-जावत देखत हे। सातो के मन के लालच के तेलई म मइके के सुरता डबके लागथे। सुरता म चुरत मन फुसुक-फुसुक रो परथे। गोहार पार के रोए म ओकरे फदित्ता होही। बपरी ल कोनो पुछ परही त का बताही। फूफू ह अपन लालच बर सातो के मति बिगाड़े रिहिस। भाई-बहिनी अउ ननंद-भउजी के नता म जोझा पारे रिहिस। सातो ह मने मन अपन करम ल कोसत आजो तीजा लेवईया अगोरत हे।

सातो ह नहां खोर के बिहनिया ले तियार होगे। अलवा जलवा मुड़ी कोरे लकर-धकर नंदिया खड़ के पिपराही म आके बइठे हे। अवइया-जवइया मन ल

टुकूर-टुकूर देखत हे। भादो के महीना म नंदिया ह मुड़ भर बोहावत रिहिस। नंदिया नरवा ह कातको जोझा पारे तीजा मनईया मन तो जा के रही। देवता बरोबर डोंगहार ह सबे झन ल ए पार ले ओ पार नहकावत हे। बांस भर पानी म तउरत डोंगा म सवार तिझयारिन मन ल देख-देख के सातो के मन निचट उदास होगे हे।

पछतावा के आंसू ले बोट बोटाय सातो के आंखी म नंदिया के ओ छोर ले डोंगा चड़हत अपन भाई दिखीस। पिपराही ले रटपटा के उठीस अउ चुंदी मुड़ी ल संवारत नंदिया कोती दऊड़गे। सातो के हांसी खुसी के ठिकाना नइ हे। नंदिया के छोर म खड़े अपन भाई के अगोरा करत पउर साल के तीजा ल सोरियावत हे।

सातो के दादा ह अपन बड़े बेटा पुनऊ ल किथे- सातो ल तीजा लाने बर आठे मान के चल देबे रे। आंहू किही त संग म लान लेबे। निंदई कोड़ई के दिन घलो चलत हे। दमांद कर जादा जोर-जबरई झन करबे। अब आज काल तो सब पोरा मान के आथे-जाथे। नंदिया नरवा के कारो बार अगवाके रेंग जबे।

उंचकहा मुंहा पुनऊ अधरसट्टी सुनिस। आठे मान के कांहा आठे के एक दिन अगाहू रेंग गे। पुनऊ ल सातो घर जाय बर पुचपुचाए। बारी म बोवाए खीरा ल झोला भर टोरिस। करेला अउ डोड़का के एकक ठन मोटरी गठिया के निकलगे सातो घर जाए बर।

पुनऊ अउ सातो के नानपन के हांसी दिल्लगी ह बर बिहाव होय के बाद घलो नइ छुटे रिहिस। संगे बर बिहाव होइस, संगे दूनो के गवन पठउनी होगे। सातो के ददा ह गांव के बड़का किसान रिहिस। घर म चीज बस कांही के खंगता नइ रिहिस। गांव म ऊंकरे सुती चले ते पाय के पुनऊ ह थोकिन अड़दली रिहिस।

ददा ह जाय ल केहे हे किके बारी ले घर नइ अइस मोटरी धरे सोज सातो घर रेंग दिस। घर ले बता के जातिस त भउजी ह रोटी पीठा जोरतिस। ददा ह बारी म गोठियइस सातो घर जाबे किके। पुनऊ ह कोनो ल आरो करे बिगर मोटरी भर साग भाजी धरके निकलगे। पुनऊ ह पैडगरी रद्दा म अकेल्ला रेगंत झोला के खीरा ल खावत-खावत जावत रिथे। नंदिया खड़ के पहुचत ले झोला ल अपने ह अधिया डरथे। सातो ल देहू किके आधा झोला खीरा ल बचाय घाट म पहुंचे हे। किंजर-किंजर के डोंगा देखत हे। काम कमई के दिन म डोंगा घलो कम चलत रिहिस। एके ठन डोंगा वाला रिहिस। उहू ह वो पार खड़े रिहीस।

कांहा डोंगा अगोरत रइहा किके पुनऊ ह मुड़ भर बोहावत नंदिया ल तऊर के

नाहक गे। दूनो हाथ म एकक ठन मोटरी ल धरे हे। खीरा के झोला ल टोटा म अरोय हे। पार म नाहक के सबो समान ल टमड़िस। करेला अउ डोड़का के मोटरी तो बने रिहिस फेर खीरा ह बोहा गे रिहिस। पुनऊ ह सालेच के झोला भर खीरा धरके निकलथे। कोनो साल अपने ह खाते खात सिरवा डरथे। त कोनो साल नंदिया म बोहा जए। सातो ह करेला अउ डोड़कच ल पाथे।

कच्चा-कच्चा कुरता ल पहिने पुनऊ ह सातो घर पहुचिस। भाई ल देखके सातो ह मगन होगे। लोटा भर पानी दिस अउ पावं परिस। सुख्खा गमछा म मुड़ी कान ल पोछिस। पुनऊ ह मोटरी ल लमावत किथे- येदे बहिनी करेला अउ डोड़का लाने हवं। सातो किथे- खीरा घलो तो फरे होही भाई। खीरा काबर नइ लानेस। अतका ल सुन के पुनऊ ह दुच्छा झोला ल लमा देथे। दुच्छा झोला ल देख के सबो झन कठल के हांसथे।

अपन भाई के सुध म मगन हे सातो। खुशी के आंसू ल पोछथे अउ हांसत हांसत किथे- यहू साल एको ठन नइ बचाय भाई। कइसे पुनऊ भाई कलेचुप काबर हस। जब आथस तब दुच्छा झोला देखाथस। कहां करथस मोर बाटा के खीरा ल। सातो के गोठ ल सुन के डोंगा ले उतरत अनगइहा सगा ह सातो ल किथे- कोन ल काहत हस वो। मैं तो तोला नइ चिनहत हवं। अतका ल सुन के सातो के मन के भरम टुटगे। सातो ह अनचिनहार ल अपन भाई जान के गजब आस लगा डरे रिहिस। उही आस के धुंधरा म ओला अनगईहा ह भाई दिखत रिहिस। बपरी ह निरास होके आंसू ल पोछत फेर पिपराही म लहुटगे।

सातो के मन म का बितिस होही जब अनचिनहार ल भाई जान के मया लड़ावत रिहिस। उहू अनगइहा ह नइ चिनहवं कइ दिस। एक घाव बहिनी की देतिस त ओकर का बिगड़ जतिस। सातो अपन मन मढ़ावत किसमत ल कोसत हे। आखिर गलती तो ओकरो कोती ले होए हे। सबो बने बने चलत रिहिस। एक दिन अचानक सातो के ददा बितगे। ददा के बिते के पाछु पुनऊ ह बहिनी ल बेटी बरोबर मया दुलार करे। तीजा पोरा म पुछे-गउछे। भउजी घलो सातो ल नोनी ले आगू एक भाखा नइ बोलत रिहिस। आगू के आगू ओकर बर लुगरा पाटा लेवत रिहिस। इही बात ह पुनऊ के फूफू ल नइ सुहइस। पुनऊ करा अपन भाई के जहिजाद म हिसा मांगे बर आगे। पुनऊ मन एक भाई एक बहिनी हे ओइसने ओकर ददा मन घलो एक भाइ एक बहिनी रिहीस। झगरा लड़के फूफू ह अपन नता तो टोरिस संग म

सातो ल घलो जुझो दिस।

फूफू ह घेरी बेरी सातो घर जाके ओकर भउजी के लिगरी लगावत काहय– सातो तोर भउजी ह सबे चीज बस ल अपन मइके म लेग–लेग के जोरत हे। तोर भाइ ह सिधवा हे अउ भउजी चाल बाज। चीज बस के राहत ले पुछत हे। सिरावन तो दे कुकुर नइ पुछे तोला। फूफू ह तो अपने घर के आए अउ भउजी ह पर घर ले आए हे। इही सोच के सातो ह घलो फूफू के बात म आगे अउ जुरे पंचइत म बाटा बर खड़ा होगे।

सातो मने मन गुनत हे। बाटा नइ मांगे रइतेवं त आज मोरो भाई लेगे बर आए रितिस। भउजी ह तीजा के जोरा करतिस। गुनते गुनत सातो ल पिपराही म बइठे बिहनिया ले संझा होगे रिहिस। सातो ह अपन मन ल मारत घर आए बर उठिस। रोनमुहा मुंह धरे घर जाना बनो नोहे किके सातो ह नंदिया के तिर म गिस। माड़ी भर म उतर के ठोमहा म पानी लेके मुह ल धोइस।

नंदिया भीतर ले मुंह धो के लहुटत रिहिस तभे सातो के पांव कुछू जिनिस अभरिस। हांथ ल बुड़ो के टमड़िस त सातो ल दू ठन मोटरा मिलिस। मोटरा भीतर म करेला अउ डोड़का बंधाय रिहिस। दूनो मोटरा ल धर के सातो पार म आवत रिहिस तभे आगू म एक ठन दुच्छा झोला बोहावत रिहिस।

दुच्छा झोला अउ मोटरी ल पाके सातो के खुसी के ठिकाना नइ रिहिस। भाई नइ अइस त का होगे। भाई के चिनहा ह आगे। मइके के सुरता म उदास मन ल मढ़ावत सातो ह अपन घर लहुटगे। दुच्छा झोला ल धरे सातो घर म जाथे। घर म ओकर पुनऊ भाई चरिहा भर करेला अउ डोड़का ल धरे दुवारी म बइठे राहय। जाते साठ सातो ल किथे ते कहा गे रेहे बहिनी घर म तारा लगके। भांची अउ भांटो मन कहा हे। ओकर आंखी ल परतित नइ होत रिहिस कि सिरतो म पुनऊ भाई आगे हे। बोकबाय सातो ल हलावत पुनऊ किथे ते फेर खीरा बर नराज होगे का बहिनी। अतका ल सून के सातो के चेत आगे। पुनऊ अउ सातो बिते बखत ल भुलाके फेर तीजा के फरहार खईन।

आठ

गांव के लीला चौरा म संझउती होइस ताहन गजब भीड़ जुरिया जथे। लइका मन तो दिन बुड़े के पहिलीच ले अपन-अपन बर जगह पोगरा डरथे। संझकेरहे जेवन करके घलो आ जथे। भीतर कोती सब कलाकार मन संभरथे अउ बाहिर म देखइया मन के भीड़ जुरियावथे। अब अगोरा हे त राम लीला सुरु होय के।

लीला ल गांव के मनखे मन गंगा कस फरिहर अउ प्रयाग कस पावन मानथे। घरो घर ले आरती के थारी आथे। गांव के लीला चौरा म संउहत भगवान राम, लछमन, माता जानकी अउ बीर हनुमान बिराज मन होथे। मंगल आरती के संग सुरु होथे राम जी के लीला।

दुरपती ह रात कन के जेवन बना के अपन सहेली मन संग लीला देखे बर निकलथे। ददा ह खिसिया के किथे- घर के बुता काम छुट जए ते छुट जए फेर तोर लीला हर झन छुटे। दे मोला कावंरा खाय बर ताहन जाबे।

दुरपती किथे- दाई करा मांग ले न गा। लीला सुरु होगे हम जाथन हमर सहेली मन अगोरत होही। साल ल ओड़हिस, बोरा धरिस अउ निकलगे। सबो सहेली एके करा जुरिया के बइठथे।

लीला ल बड़ धियान से देखथे। लछमन के पाठ के बेरा तो दुरपती लिपकी घलो नइ मारे। ओकर सहेली मन ह गोठिवात रिथे तेन मन ल सांत करा देथे। सहेली मन दुरपती के परेम ले अनजान नइ रिहिस। सबो झन जाने येहा लीला म रमायन देखे बर नइ आवे। येतो लीला म लछमन के पाठ करथे ते राधे ल देखे बर आथे।

राधे अउ दुरपती म अगास परेम रिहिस। राधे ह अपन पाठ म बुड़े रिहिस त

दुरपती ह राधे के परेम म बुड़े रिहिस। जभे लीला सिरातिस तभे दुरपती ह घर आतिस। अपन संग म अपन सेहली मन ल घलो बइठार के राखे राहय।

रात के लीला सिरावे ताहन बिहनिया राधे ह तरिया के पार म ओड़ा ल दे राहय। दुरपती ह थारी बरतन धोय बर आवे। राधे ह बइला-भइसा धोवत बइठे राहय। अपन-अपन काम म दूनो रमे हे फेर दूनो के नजर ह एक दूसर म लगे हे। नजर ले नजर जुड़े इसारा-इसारा म गोठ बात होय।

राधे अउ दुरपती के मया ह गांव भर म आगी बरोबर गुंगवागे। दूनो के घर म उकर मया के सोर उड़गे। एके जात सगा के रिहिस। दूनो डहर के सियान मन मिल बइठ के लइका मन के खुसी के खातिर बिहाव करे के फैसला करिस अउ फलदान ल तुरते मड़ा दिस।

गांव के सगा सोधर कतेक चोचला लगाही। वोकर चूलहा ल ए देखे, एकर चूलहा ल वो देखे। सगा मन अपन घर ले गोड़ धो के दुरपती घर आगे। सगा घर गोड़ धोय के जरुरते नइ हे। ए पारा ले ओ पारा जाय म कतेक धुररा उड़ही। फेर सगा घर गोड़ धोय के नेंग तो छुटे ल परही।

फलदान म कोनो बाहिर के सगा दिखबे नइ करे। राधे डहर ओकर लीला पालटी वाला अउ दुरपती कोती उकर घर के अउ दू चार झन सहेली भइगे। राम, लछमन, भरत, सतरोहन, रावन, मेंगनाथ, हनुमान, सीता, मंदोदरी, सुरपनक्खा, जोक्कड़ अउ संग म तबलची, बेंजो मास्टर, ढोलकाहा मन घलो पधारे रिहिस।

फलदान के बेरा लीला के महराज ह दोहा अउ चौपाई पढ़े- मंगल भवन अमंगल हारी, कबहू सुदसरत अजिर बिहारी राम सियाराम राम सियाराम जै जै राम। राधे दुरपती के फलदान होवे सबो संगी संग राम लीला मंडली ह आवे राम सियाराम जै जै राम।

अइसन बखत म हॉसी मजाक तो होते रिथे फेर जइसन सगा रिहिस तइसन हासी मजाक चलिस। दुरपती अउ राधे के फलदान निपटगे। संझा होवथे किके सबे झन रेसल खोली म चल दिस। रात कन फेर लीला सुरु होइस। दुरपती ह अपन सहेली मन संग देखे बर बइठे हे।

राम के पाठ आथे त दुरपती के सहेली मन किथे मुड़ी ल ढांक न वो तोर कूरासासुर ह आगे। दुरपती के दूपट्टा ल धरिस अउ मुड़ी ढांक दिस। लछमन के पाठ आवे त दुरपती ह लाज के मारे मुड़ी ल गड़िया लेवे। वोकर सहेली मन राम लीला देखे ल छोड़के दुरपती संग दिल्लगी लगाय।

सहेली मन के घेरी-बेरी के दिल्लगी म दुरपती ह खिसीयागे अउ रात के बेरा म लीला ल आधा छोड़के उठगे। अपन धुन म घर कोत रेगिस। घर के आगू म थोकुन कोलकी परथे। कोलकी ह कुलूप अंधियार रिथे। जइसे कोलकी मेर पहुंचथे दू झन मंदहा मन मंद के नसा म बपरी ल बिलई कस झपट देथे।

राधे के पिरीत म मगन दुरपती ह घर आवत रिहिस, का जानय बिचारी ह कलजुग के दुरयोधन मन मेड़री मारे बइठे हे तेला। गजब चिख पुकार मचइस फेर कोनो मदद बर नइ अइस। लीला के पोंगा के गोहार म दुरपती के पुकार दबगे। द्वापर के दुरपती ल तो भगवान किसन बचा ले रिहिस। कलजुग के नारी ल कोन बचावे। तलफत केवंची करेजा कांपगे। निरदई राकछत मन मुरछा देह ल छोड़के भागगे।

आधा रात के लीला सिरइस त पारा के मन लहुटिस। अंधयारी कोलकी म काहरत जीव देखके सबो के सांस अरहजगे। लकर-धकर तिर म जाके माचिस बार के देखिस, सबके नजर म दुरपती हमागे। बपरी के हालत ल देख के सबो अनहोनी ल भांप डरिस।

धरा पछरा कपड़ा लपेट के असपताल लेगिस। कोनो झन जाने किके घर के मन चोरी लुका इलाज पानी कराइस। मुंह लूकावत अपने छइहा ल डर्रावत दुरपती ह चार दिन म घर आइस। गांव भर म बात बगरगे रिहिस। दुरपती के घर वाला मन अतियाचारी के नाव ल बकरे ल किहिस। फेर डर के मारे नाव नइ बता सकत रिहिस।

लोक लाज के डर म दुरपती ह अपन जीव देबर एक दिन अपने देह म माटी तेल रुको डरिस। माचिस जियाते रिहिस ततके म ठुक ले राधे ह आगे। हाथ ले माचिस नंगा के फेकिस अउ दुरपती के हाथ थाम के किथे- ये विपदा के बेरा म घलो मे तोर साथ हवं, निच के छुये म तोर मास बस्सा नइ गे। वो अंधयारी रात ल तै सपना समझ के भुला जा। तै जब किबे तब मे तोर संग बिहाव करे बर तियार हवं। फेर बदला म तोला ओकर नाव बताय ल परही। राधे ल संग म पाके दुरपती के बल बाड़गे। हिम्मत कर के मुंह खोलिस। ठेठवार के दूनो दरवाहा टूरा के नाव ल बकरिस। बउराय बरन पारा मोहल्ला के मन दूनो टूरा ल नंगत छरीस। गांव के सियान मन पंचइत म फैसला कराबो कइके छोड़ा दिस नइते जीये ले डरतिस।

पंचइत बइठिस त ठेठवार ह अपन टूरा के करनी के समाज म माफी मांगिस। ठेठवार मुड़ी नवाय किथे टूरा मन ह गुनाह करे हे तेकर सजा भोगे बर

तियार हन जेन भी पंचइत के फैसला होही हमला मंजूर हे। पंचइत ह अपन फैसला सुनइस के आज ले तुहर गांव निकाला हे। अपन घर दुवार ल छोड़ के तूमन ल जाय ल परही। अउ फेर लहूट के ये गांव म झन आहू। सरपंच अउ पंच के ये फैसला म सबे झन हामी भरिन। फेर दुरपती ल येहा मंजुर नइ रिहिस।

दुरपती किथे- ये मन ल गांव निकाला झन देव। इहा ले निकल के अऊ कोनो गांव म जाके हांसी खुसी ले रही। अउ मउका पाके फेर कोनो म नियत गड़ाही। ये सजा ह येकर मन बर मुनासीब नइ हे।

गांव के मुखिया किथे- येमन ल का सजा दे जाय बेटी तही ह बता। तोर गुनेगार ल तही ह सजा दे।

दुरपती किथे- येमन ल गांवे म राहन दव। आज ले इकर पौनी पसारी बंद अउ गांव म रइ के भी गांव के समाज ले बाहिर रही। मेहा जेन अपमान के आगी म जरे हवं ओकर आंच इहू मन ल मिलना चाही। गांव म रही त रोज अपमान के अंगरा म जरही।

अउ एक ठन सजा मे सरी गांव ल देना चाहत हवं। जेन दारु के नसा म मोर गत बिगड़िस। आज ले वो दारु के दूकान ल बंद करा दव मोर अतकचे बिनती हे। दुरपती के ये बिचार ह सबो ल बने लागिस। नियाव के तुरते अमल होगे। ठेठवार के टूरा मन ल उकर करनी के सजा मिलगे। जेन दारु के सेती घर परिवार के गत बिगड़थे नोनी बाबू मन बिगड़थे वो दारु के दूकान बंद होगे।

दुरपती के नियाव म करइया कइवरया दूनो ल सजा मिलगे। राधे के चरन छू के दुरपती किथे मोला बल तोरे ले मिलिस। कहू तै मोला नइ अपनाए रितेस त आज मैं अपमान के अंगरा म जर के भुंजा जाए रितेव। तूमन तो मोर भगवान आव।

अतका ल सुन के राधे किथे अभी मे भगवान नइ हवं। लीला म बनथव। चल घर संझा होवथे लीला के तियारी करना हे। अभी तो लछमन ल सक्ती बान, मेंगनाथ वध, रावन दहन बांचे। रावन के मरे के बाद राम के राज तिलक होही अउ लीला सिराही। अतका म गांव के सियान मन घलो उकर पंदउली देथे अउ किथे तेकर पाछू राधे अउ दुरपती के बिहाव होही।

नौ

गजब दिन बाद तरिया पार के बुढ़ादेव के मंदिर म मनमाड़े भीड़ जुरियाय हे। कोनो नरियर चड़ावथे कोनो फूल पान चड़ावथे। उहा के अगरबत्ती अउ हूम धूप ले तो सरी गांव ममहावे। मंदिर भितरी पिड़हा म पलतियाय एक झन साधू महारज बइठे हे, ओकरे दरस बर पूरा गांव उमड़ गे हावय। मंदिर के दुवारी के आत ले दरस करईया मन लमियागे हे। बाबू पिला मन के अलग अउ नोनी मन के अलग लाइन लगे हे। भीड़ ल देखे म अइसे लागथे जानो माने साकछात देवता ह मंदिर म बिराजमान होगे होही। ढकलिक-ढकला म बोजाय परत हे तभो ले एक नजर दरस के आस बर लोगन मन ह मंदिर म जुझे हे।

दरस करइया मन एकक करके भीतर जात जाए अउ अपन-अपन भाग ल जान के बाहिर आत जाए। उही गांव के रहईया गनेस ह दरस करके अईस त बाहिर म खड़े रामू ह पुछथे कस जी ओ साधू आहे तेन ह का लेथे अउ काला देख के बताथे। गनेस किथे काहीच नइ लय ते जाबे ताहन तोर थोथना ल देखही अउ हवन जलाहे तेमा हूम ल डारही। ताहन तोर सबे ल फरिफरा बता दिही। साधू महराज ह रुपिया पइसा काही नइ मांगे तोर उचित के दान देवता म चड़ा देबे। अतका ल सुन के रामू घलो साधू के दरस करे के मन बनइस अउ लाइन म लगगे।

धीरे-धीरे लाइन सरकत-सरकत रामू के पारी आइस। साधू महराज ह रामू ल दू गड़ी हूम ल दिस आगी म छोड़ाइस कलस म बुड़े दुबी पान के आगी म ऑचमन करईस। साधू किथे तोर नाम रा अक्षर ले आथे। रामू किहिस हव महराज मोर रामू नाव हे। साधू किथे तोर बाई के नाम क अक्षर ले आथे। रामू- हव महराज

मोर बाई के नाव कमला हे। साधू- तोर तीन बेटी अउ एक बेटा हे। रामू किथे हहो महराज। साधू के सत बचन सून के रामू किथे- तेतो सबे ल जानथस साधू महराज मोर ददा के बारे म बताते। महराज ह आंखी मुंद के धियान लगइस अउ मने मन म मंतर बड़बड़ाइस। थोरकेच म आंखी उघारके किहिस तोर बाप गांव म कोतवाली करे अउ वोला बीते बीस बरस होगे हे। अतका ल सुन के रामू ह मन मगन होगे अउ सौ रुपिया के नोट ल निकाल के साधू धरावत रिहिस।

साधू किथे- हम रुपिया पइसा नइ लेवन बेटा। तोला देच बर हे त ये रुपिया ल बुढ़ादेव के मंदिर म चड़ा दे। रामू सौ के एकठन अऊ नोट निकालिस अउ चड़ा दिस। रामू पुछिस कोन आव महराज काहां ले आय हवं। साधू किथे हम तो रमता जोगी आन जिहे ठहर गेन तिही ल हमर घर दुवार जान।

साधु महराज के गियान अउ महानता के सेती गांव वाला मन ओला अपने गांव अमलेसर म डेरा जमाय के बिनती करथे। साधू ह गांव वाला मन के बात मान के उही मंदिर म अपन धुनी रमा दिस। ओरी-ओरी गांव के सबे मनखे मन साधू के मुंह ले अपन भाग के आज अउ काल ल जान डरिस। बुढ़ादेव के मंदिर म धुनी रमाय साधू ह सबला हवन के आगी म हुम देवावे अउ भविष्य बतावे तेकर सेती गांव म ओहा हूमदेवा महराज के नाम परसिध होगे। दिनो दिन हूमदेवा महराज के सत ह बगरत गिस। लोगन मन अब अपन इच्छा ले चाउर दार रुपिया पइसा चढ़ावत राहय उही म महराज के गुजारा चलय।

अब तो तीर तखार के गांव वाला मन घलो हूमदेवा के दरस करे बर आए लगगे। जेकर जइसे इच्छा तइसे अपन उचित के दान बुढ़ादेव म चड़ावा चड़ा के हूमदेवा के असिस पा लय। देखते-देखत दूवे साल के दान म बुढ़ादेव के बड़ेजन मंदिर बनगे। मंदिर के तो रंग रुप बदल गे फेर साधू के आदत बेवहार थोरको नइ बदलिस। धन दौलत के माया मोह ओकर भीतर आबे नइ करिस। कोन जाने अउ का पाय के आस म हूमदेवा महराज धुनी रामाय हे। काकर आय के आस म ओकर आंखी ह चोबीसो घंटा जागत हे तेला उही जाने।

हसउद वाली सांति ह घलो एक दिन अमलेसर म आय हूमदेवा महराज के किस्सा सुनिस। सांति के सुखाय घाव फेर हरियागे। सांति ह जेन मन के पिरा ल भुलाय बर दस कोस दुरिहा हसउद आ बसे रिहिस उही पिरा ह आज फेर ओकर मन म लोटगे। घड़ी-घड़ी बेटा के सुध सताय लगिस। आखिर अपने मन ले हार के सांति ह अमलेसर जाय के सुध लमइस।

सांति ह अमलेसर के बिहाता बहू ये। जब उहा ले निकलिस त अपन देह ल मुर्दा जान के निकलिस ताहन फेर दूबारा उहा पावं नइ धरिस। गांव अवई-जवई तो दूरिहा अमलेसर के नाव सुन के कान ल मुंद लय। सांति ह चालिस साल बाद ओ गांव म जाय के मन करे हे उहू म अपन बेटा के खातिर। अमलेसर जाय बर तो सांति ह घर ले तो निकलगे फेर ओकर मन ह आजो उहा जाए ल नइ काहथे। मया ले हारे अउ मन ल मारे सांति ह नानकुन झोला म सेर चाउर धर के घर ले निकलगे। धीरे-धीरे रद्दा रेंगत अपन बिहा के दिन सुरता करथे।

आगू के दिन म बिहा के आगू नोनी-बाबू ल देखे के रित नइ रिहिस। दाई-ददा ह जेकर अछरा म बांध दिस, जीयत मरत ले ओकरे संग जोड़ी जुड़ जथे। सांति ह बड़ खुसी-खुसी हसउद ले बिहा के अमलेसर आय रिहिस। किथे बिहा के बाद बेटी के दूसरा जनम होथे। बाप के घर ले निकल के ससुर के अंगना म पांव धरथे। ये तो अपन-अपन भाग के कोन ह कइसन घर-संसार ल पाथे। नवा-नवा म तो काही पै नइ दिखिस फेर चारे महीना के बिते ले देरानी-जेठानी संग तारी नइ पटिस। रोज दिन लिखरी-लिखरी बात बर खिटिर-पिटिर होवत राहय।

गरीब घर के बेटी अपन जोरन म दाई-ददा के आसिस के छोड़े अउ कुछू नइ लाने रिहिस। सांति ह देरानी-जेठानी के गारी बखाना के बात ल सास ल बतावे त ओकर सास उलटा ओखरे बर बउरा जए। सांति के देरानी-जेठानी मन तो बड़े-बड़े घर ले गे रिहिस। अपन जोरन म हंडा भर-भर दाहिज धर के लाने रिहिस ते पाय के ससुर घलो उही मन ल भावे। बपरी गरीबिन अब काकर सो अपन दुख पीरा बिसरातिस।

सास-ससुर, देरानी-जेठानी ले भरे पूरे परवार रई के भी सांति ह अकेल्ला हो जए। सांति के घरवाला तो मंधवा। घर म का होवथे ओला काही के संसो नइ हे। सांति के तो एक नइ सुनय तभो ले बिचारी ह सबो के ताना सुनत ससुरार म जीव दे बइठे हे। सांति ल ओ मन कभू अपन घर के बहु नइ जानिस। जब देखबे तब नौकर बरोबर ओला हांकत रइथे। बिन मुंह के गाय बरोबर गेरवा म बंधाय हे त बने हे कोनो दिन मुंह म कही की परथे त मंधवा के मार खावे। सांति ह कांही नइ काहय तभो ले चलवंतिन मन लड़े के ओखी खोजत रइथे।

एक दिन रिस के मारे सांति ह अपन मइके चल दिस। दाई-ददा ह दिन भर मया ले गोठिया लिस। संझाकुन समझा बुझा के फेर ससुरार अमरा दिस। नारी जनम धरे हस त दुख भोगे ल परही। नारी देह के उपर मन के बस थोरहे चलही नइ चाह

के भी सांति के पांव भारी होगे। अब तो कहू जा घलो नइ सके। हरु गरु हे ते पाय के नरक कस दुनिया म ओड़ा दताय हे। नौ महिना के बाद गरीबिन के कोख ले भागी के जनम होगे। इही ओढ़र म मोरो भाग सवरही किके सांति के मन म खुसी हमांगे। काबर की बेटा के मुह देखके तो बड़े-बड़े अधर्मी के धरम जाग जथे।

भागी बेटा के सेती सांति के भाग म विधाता ह चार साल के सुख लिखे रिहिस होही। तभे तो चार साल सास-ससुर, देरानी-जेठनी, काकरो ताना नइ सुनइस। भागी ह महतारी के दूध ल छोड़ के अब पसिया पेज खाय ल धर लिस। लइका मुंह म कॉवरा का गिस गरीबिन के भाग के सुख अटागे। सांति ह फेर बात-बात म दाहिज के ठोसरा खावे। रोज-रोज के ठोसरा म दाना-पानी हर ओकर अंग नइ लगिस अउ संसो के घुन म सुखा के सांति ह काड़ी होगे रिहिस।

सास ससुर ल तो छोड़ पति ह घलो सांति के जतन-पानी बर जिकर नइ करिस। बिना दाहिज के आए रिहिस ते पाय के बपरी के गत बिगड़त हे। सांति ल बीमरहिन होगे किके मंधवा गोसइया ह अऊ नवा गोसइन बना लिस। डउका जात के का हे जांगर के चलत ले डउकी बनाही लोक लाज के डर तो नारी परानी ल हे। सांति के सउत तो सबले जादा चलचला हे बात-बात म कटकिट-कटकिट करथे। हड़िया के डर म कांपत सांति बर तो अऊ परई आगे। अब ये घर म मैं नइ खटाववं किके सांति अपन लइका ल धर के मइके म निकलगे। अपन गिस ते गिस लइका ल घलो लेगे किके सास ससुर ह पछलिग्गा ओकर मइके आगे। सांति ह भागी ल कोरा म लुकाय रिहिस तेला नंगा के लान लिस।

गांव म बइठका सकेल के सांति अउ मंधवा के छोड़ा-छाड़ी करा दिस। सांति ल अपन ससुरार के लड़ई-झगरा ले मुक्ती मिलगे फेर अपन भागी के सकला नइ कर सकिस। लइका ल पंचइत ह ओकर बाप के हिले लगा दिस। सांति ह लइका ल अपने तिर राखे गर गजब अरजी बिनती करिस। मोर लइका ल मोला देदे ... मोर लइका ल मोला देदव ... कलप-कलप के रोवत हे। तभो ले पंचइत ह लइका ल सांति ल नइ देवइस।

सांति ह तुहर मुंह देखना तो छोड़ गांव म पांव तको नइ मड़ाव किके दुच्छा हाथ पंचइत ले घर लहूटगे। दूयेच साल के गे ले अचानक ओकर लइका भागी ह घर ले लापता होगे। गजब खोजिस फेर कोनो डहर सोर पता नइ मिलिस। कोनो घर ले खेदार दिस धन अपने ह घर ले निकल के कोनो डहर चलदिस ते काहि जानबा नइ होइस। सांति ह अपन कोत ले गजब खोजिस। जेने डहर जाय के आस मिलय

तेने कोती दउड़ जए। सांति के भाग म भागी के मया लिखेच नइ रिहिस। सगे बाप अउ मोसी दाई ह अपन लोग लइका के मया म ओ लइका ल भुलागे। फेर सांति ह अपन बियाय लइका ल कइसे भुलातिस। सांति ल लइका खोजत आधा उमर होगे फेर बपरी अभागिन ह आज ले अपन बेटा नइ पाय हे।

हूमदेवा महराज के नाव सुन के सांति के मन म फेर आस जागे हे। लइका नइ मिलही त ओकर सोर पता तो मिलही किके मने मन सोचत अमलेसर के सियार ल खुंदत हे। सांति ह जवानी म निकले रिहिस ते बुढ़ापा म लइका के खतिर फेर अमलेसर म पांव मड़ावत हे। पंदरा सौ के बस्ती ह अब पंदरा हजार आबादी के सहर बनगे रिहिस। कोनो चिनहार मनखे नइ दिखत रिहिस। सांति ह एकझन दुकान वाला ल पुछिस हूमदेवा महराज ह कते मेर हे ग। दुकान वाला किथे बुढ़ादेव मंदिर म रइथे वो। सांति ह बुढ़ादेव के मंदिर ल जवानी के दिन म देखे रिहिस। सुरता करत धुसुर-धुसुर मंदिर के लकठा म पहुचगे।

तरिया पार के नानकुन मंदिर के म जगा बड़ेकजन मंदिर बने रिहिस। हो न हो इही होही साधू के डेरा किके सांति ह भितरी म गिस। लाम-लाम मेछा डाढ़ही कनिहा के आत ले लटियारा चुंदी, धुनि रमाय आसन जमाय बइठे रिहिस। सांति ह जाके हवन के आगी म दू गड़ी हूम ल डारिस कलस के जल ले आचंमन करिस अउ बुढ़ादेव के आगु मुंडी नवइस। सांति के छईहा परते ही साधू महराज के आंखी टप ले उघरगे। सांति ल देखते ही आठो पाहर जागत ओकर आंखी म आंसू भरगे। साधू के आंखी अइसे सुकून भरे लिपकी परय जइसे ओकरे अगोरा म बरसो जागे होही। तन ल मन के बस म करत सुख भरे सांस लिस।

साधू महराज अपन नजर भर सांति ल देखत किथे- तै अपन दूधमुहा लइका ल ससुरार म छोड़ के निकले हस दाई अउ आज ले मइके म बइठेहस। ते जेन लइका के खोज म आय हस ओहा तो कब के जोगी होगे हे। लइका के आरो देवा के साधू ह सांति के सुखाय मया ल उभरा दिस। सांति ह लइका के सुरता म सुसक ससुक के रो डरिस। सिरतोन काहथव महराज मैं अपन लइका के खोज म आए हवं। हूमदेवा के पांव म गिर के किथे मोला मोर लइका के पता बता दव महराज। मैं अपन लइका बिना न जीये सकत हवं अउ न मरे सकत हवं। एक नजर ओला देख लेतेवं त मोरो जीव जुड़ा जतिस। साधू किथे मोर पांव ल झन धर दाइ तै तो मोर माता समान हस। तोर लइका ह तोरे सेती जोगी होहे। नानपन म तोर कोरा छूटगे। मोसी दाई ले मया के आस लगाये त वहू धुतकार दिस। मोसी दाई अपन बियाय

लइका के दुलार म तोर भागी के भाग म दुख-पिरा लिख दिस। तोर लइका बर सबे के मया अटागे रिहिस। मोसी दाई के दू ठन आंखी होगे रिहिस। एक ठन आंखी म अपन बियाय बर अगाध मया राहय अउ दूसर आंखी ह तोर बेटा बर ललियाय राहय। एक ठन थारी म घीव के रोटी आमा के अथान। दूसर म सूक्खा रोटी अउ नून मिरचा के चटनी। रो-रो के दिन काटिस अभागा। जे दिन हद ले बाहिर होगे अतियाचार, भगागे लइका छोड़ के घर दुवार। बड़ भागमानी रिहिस लइका जोन पालिस साधू के संगत। सत संगत नइ मिलतिस त कोन जनी लइका के का गत होतिस।

बेटा के हाल चाल सुनत सांति के आंसू टप- टप हूमदेवा महराज के हवन म गिरत रिहिस। बतावत-बतावत साधू के आंखी ले घलो आंसू के धार बोहाय लगगे। सांति किथे हूमदेवा महराज तूमन मोर भागी के नस-नस के खबर धरे हव। आज के बेरा म कोनो गियानी म अतका बल नइये जोन काकरो भीतर के पिरा ल भांप सके। तै तो घटना के अइसे बरन करे हस जइसे तोरे उपर बिते हे। हो न हो तिही ह मोर लइका आस किके सांति ह साधू ल पोटार लीस। महतारी के मया के आगू साधू के माया नइ चलिस।

सांति के छाती म ओधे-ओधे साधू किथे- हव दाई मिही तोर लइका भागी आवं। फेर मैं ह अब माया मोह छोड़ के बैरागी होगे हवं। मैं गांव के मन के परछो ले खातिर आय रेहेव। घर हाल चाल जाने बर आय रेहेव। फेर ये गांव के मन तो मोला अपन गांव के लइका नहीं हूमदेवा महराज के रुप म चिनहीस। दाई तै ह आज मोला अपन बेटा के रुप म चिन डरेस।

साधू ह सांति के पांव छू के किहिस माता मैं ह तो अब तोला बेटा के सुख न नइ दे सकवं। अब तहू ह ये बात ल इही मेर बिसर जा अउ लहूट ता अपन अंगना। महू ल जाना हे अपन ठिकाना। जेन कारज बर मैं इहा आय रेहेव ओ आज पूरा होगे। साधू महराज ह सांति के आंसू पोछिस अउ वोकर मुड़ी म हाथ रख के किहिस दाई आज ले ना मैं तोर बेटा अव अउ ना तै मोर महतारी। तै अपन दुनिया म लहुट जा। मैं अपन दुनिया म जाथवं। अतका कइके साधू ह आंखी मुंद के धियान म बइठगे। सांति ह घलो आंखी उघारिस अउ जय हूमदेवा किके महराज के जय जयकार करत उही पांव अपन गांव लहुटगे। ओ दिन के बाद गांव के मंदिर म कोनो ह हूमदेवा महराज ल नइ देखिस। काहा गिस काबर गिस। जोगी के मन के बात जोगी जाने रे भाई।

दस

बरसत पानी म नांगर जोतइया। घपटे अंधयारी म दउरी फंदइया। कतको जड़काला परय जांगर नइ कापय। कमइया ल कोन माटी म गढ़े हे गढ़इया ह तेन ल उही जाने। सिरतोन म विधाता ह बनि करइया के तन अउ मन ल अलगेच बनाए हे तभे तो सुखमिन ह नारी परानी होके घर के नांगर ल थामहे हे। गांव के सब मरद मन के बरोबरी करत दिन भर म आधा अक्कड़ ल जोत डारथे। घर के सियानी के पागा बांधे सबे काम ल उरकावथे। सुखमिन ह जब ले सालिक घर आहे सुख ल जाने नही। सास के मुंह नइ देखे हे ससुर ह खटिया धरे हे। दू झन लइका ओकर कोरा म हे। ओकर घरवाला सालिक के पांच साल होगे कांहि आरो नइ मिलत हाबे।

गांव म सब बनि करे बर परदेस जाए तेमा सालिक घलो जाए। पइसा-कउड़ी के जरवत राहे त गांव म कोनो न कोनो आत-जात रहे तेकर करा पठो देवे। अपन ह साल के साल पइसा-कउड़ी कमा के, खेती-किसानी के दिन म एकट्ठा गांव आए अउ अपन किसानी बुता ल करे। खेती-किसानी के काम सिराय के बाद फेर परदेस म बनी करे बर निकल जाय। आन दरी तो लगते असाढ़ म आ जात रिहिस फेर पांच बच्छर होगे आए नइहे। गांव के मन एकक करके घर लहुंटगे फेर सालिक के सोर पता नइहे। सुखमिन ह पुछथे गांव के मन ल किथे ए भट्ठा म नइहे, ओ भट्ठा म होही। उहां पता करिस त किथे इहो नइहे। सुखमिन ल संसो होगे काहां होही, कइसन हाल म होही। सोर पता ले बर कोनो डहर निकलतिस त घर म कोनो सियान नइहे। गांव के कोनो-कोनो मन ल पुछिस त किथे सालिक ह बम्बई के कारखाना म कमात होही। अब सुखमिन ह सालिक ल खोजे बर जाही त घर-दुवार ल कोन देखही। सुखमिन ह सालिक के आए के आस म घर के सियानी ल

चलावथे। लोग लइका के पढ़ई, ससुर के दवई। नारी परानी होके सबे काम ल कर लेथे इही गजब बड़ बात हे। घर म सियान के नाम म ससुर भर हाबे तेनो ह उठन-बइठन नइ सके। बपरी सुखमिन ह घर के काम ल करके खेत जाथे। खेत ले आथे त ससुर के जतन पानी करथे। अपन मन के दरद ल मने म दोब लेथे। घर-दुवार ल छोड़ के अपन आदमी ल खोजे ल तो घलो नइ जा सके। सुरता करके रोज एक आूंस रो लेथे।

एक दिन संझउती बेरा सुखमिन ह खेत ले आवत रिहिस। वोतके बेरा चरबज्जी बस आए रिहिस। चार बजे के आखरी बस आए ते पाय के मनमाड़े भीड़ रिथे। बस ठाड़ होइस अउ ओरी-ओरी सबे सवारी उतरिस। आखिर म एक झन बुड़वा असन मनखे ल कनडेकटर ह धर के उतारिस। ओला देख के बस तीर म गजब भीड़ जुरयागे। मइलाहा असन चद्दर ओड़हे ओ डोकरा ल गांव के मन धर के सड़क तीर के होटल म लेगिन।

दिन बुड़गे रिहिस अंधियार मन मनखे नइ चिनहाइस। चिमनी ल लान के अंजोर म देखिस त सालिक आए। खांसी-खोखी अउ जर-बुखार म अकबकाय। कमजोरी म निच्चट धकधकागे रिहिस। आंखी-कान खुसर गे रिहिस। सालिक ल देख के सुखमिन ह गजब गमन होगे। ओकर बर तो मानो दुनिया के जम्मो सुख आगे। फेर ओकर सुख जादा बेरा ले नइ ठाहरिस।

पांच साल बाद पति मिलिस वहू म अधमरा। सालिक किथे मोला टीबी बिमारी धरे हे। पइसा कमाय के रोस म रोज के कारखाना के धुया ल पी पीके ये रोग ल लगाय हव। डाक्टर ह आजे काल के मेहमान अस केहे हे ते पाय के अपन जीनगी के आखरी दिन अपन गांव म कांटे बर आय हवं। सुखमिन किथे अतका ले दिन काहा रेहेव हो, हमन तोला गजब खोजेन।

सालिक किथे- मेहा अपन बीमारी ल जान डरे रेहेवं अउ फेर इहा अतेव तोर उपर अउ बोझा होतेव। इही पाय के मैं घर-परिवार ले भागे-भागे फिरत रेहेवं। सुखमिन- किथे तुही मन तो मोर पति देवता आव। अपन आप ल बोझा काबर किथव। हमरे सुख बर तो परदेस बनि कमाय बर गे रेहेव। सुखमिन ह पांव परिस अउ धर के अपन घर लानिस। बिमरहा राहय चाहे कनवा-खोरवा पति ह पति होथे। सती अनसइया के धरती म सुखमिन जइसन नारी ह जनम धरे हे। कइसे बीमार पति ल छोड़ देतिस। सालिक ल घर म बइठार के आरती उतारिस। बिहनिया ले गांव के पुरोहित करा गिस अउ बला के सतनरायन के कथा करा डरिस। सालिक ह घर लहुंट आ जए कइके सुखमिन ह गांव के देवधामी म बदना घलो बदे रिहिस।

संझा कुन गांवे के दुकान म एक्कइस ठन नरियर लिस। अउ ओरी-ओरी सबो देबी-देवता मन म जाके चड़ाइस। सुखमिन अब मगन होगे अउ अपन दुख ल बिसराके घर परवार ल बने चलावथे। दूनो झन लइका ल पढ़ाथे। अपन ह भले पढ़े-लिखे नइहे फेर पढ़ई-लिखई के महत्ता ल जानथे। अबतो सुखमिन के एके सपना हे वोकर लइका मन पढ़-लिख के बने असन काम करके घर के आधा बोझा उठाए। इही सपना संजो के अपन पेट काट-काट के लइका ल पढ़ावथे। ससुर अउ पति के सेवा करके बहु अउ पत्नी के धरम ल घलो निभावथे। गांव म खेती-किसानी अउ बनि-भुती के परसादे अपन जीवन ल चलावथे। अकेल्ला नारी परानी होके चरचर ठन जीव ल पोसथे। सुखमिन के इही बेवहार ल देखके गांव के मन ओकर साहमत बर आगू आ जथे। फेर सुखमिन काकरो सो रुपिया-पइसा के मदद नइ मांगिस।

वोतो काहय मोला काम बुता देवव जेकर बनि ले मैं घर ल चलाहूं। मैं दया अउ भीख ले अपन लोग लइका ल नइ पोसवं। रुखा-सुखा दिन बितत गिस। लइका मन बाड़हत गिस। सुखमिन ल का पढ़ई के भूत धरे रिहिस ते लइका मन ल घड़ी-घड़ी पढ़हेच बर बरजय। लइका मन ल बेरा म तियार करके इसकूल पठोवे। कापी-किताब अउ इसकूल के सरी चीज ल आगू के आगू लान के मड़ावे। कोनो-कोनो किथे सुखमिन तोर टूरा मन ल घलो काम बुता म लानते नही, त सुखमिन किथे मोर खून पछीना संग भले मोर मास बेचा जए फेर मैं अपन लइका मन के पढ़ई छोड़ा के वोमन ल काम म नइ लागवं। लइका मन गजब मेहनती रिहिस। दाई ह बाहिर कमाय बर जाए राहे त अपन मन इसकूल ले आके घर के काम कर डरे। अपन बाप सालिक अउ बबा के जतन पानी घलो करे। बाकी बेरा म सिरीफपढ़ई बुता ल करे।

वोकर सेवा भाव एक दिन भगवान के आंखी म दिखिस। लइका मन बने ढंग ले पढ़-लिख के हूसियार होगे। एक झन हा गांव के इसकूल म मास्टर होगे अउ दूसर ह अभी डाक्टरी पढ़त हाबे। अबतो सुखमिन बर सुख के दिन आगे। लइका ह ओकर मुड़ी के बोझा ल बोहे के लइक होगे। जेन सुख बर सुखमिन ह अपन लहू ल पेर के घर ल चलइस वो सुख ल पा लिस। बेटा मन अब वोला थोरको काम करन नइ देवे। एक बेर के पसिया म गुजारा करइया सुखमिन ह अब बेटा मन के परसादे घी के रोटी खाथे। दिन ह अब ससुर अउ पति के सेवा म बितथे। सुखमिन के दिन बहुरत देखके गांव वाला मन किथे गरीबी म घलो बेटा मन ला पढ़ाइस लिखाइस तेकर सेती सुखमिन ह आज सुख के दिन देखत हे।

गियारा

जाड़ के दिन म स्कूल जाय बर लइका मन ल गजब मनाय बर लागथे। बिहनिया ले जागय नहीं। जाग जही त नहाय नहीं अउ नहा लिही त पइसा धरे बिना टरय नही। एकरे सेती तो कुंती ह किसन ल रोजे ठठाथे। मनायेक ल मनाथे घलो नइच मानही त नंगत दोहनथे। दाई-ददा ह नइ पढ़े हन त का हागे फेर लइका ल पढ़ाबो किके गजब साध मरथे। हजार नखरा करही तबले मनाके स्कूल पठोथे। किसन के रोज के इही रोना राहे।

कुंती ह बिहनिया सबले आगू उठ के चुल्हा ल लिपही तेकर पाछु पानी भरही। तेकर पाछु किसन अउ ओकर ददा ल उठाथे। उठते साठ दूनों झन ल चाहा होना। किसन ह दाई चाहा देना काहते काहत उटथे। कुंती किथे मैं तोर बर चाहा लावथव ते जा के मुंह आंखी धो के आ जा। किसन बिना मुंह आंखी धोय चाहा म दतगे। ओकर ददा किथे ले काही नइ होय देदे। पी के धो लिही लइका जात ताए। कुंती किथे अइसने किके लइका ल मुड़ी म चघाय हस। देखबे अब नहाय बर कतका नखरा लगाही तेला।

सहिच म ए लइका बड़ घेक्खर हे। हव कही त हव नहीं त नहीच हे। किथे न अप्पत के देखे देवता हारे तइसने बरोबर कुंती ह किसन ले हार जथे। स्कूल के बेरा होगे किके सबे काम ल छोड़ के आगू ओकरे तियारी करथे। नहवा-खोरा के कपड़ा लत्ता पहिरा के ओला स्कूल अमरा के आथे तेकर पाछु घर के अंगना दुवारी ल बाहरथे। कोठा-कुरिया के गोबर-चिखल ल हेरही। कभू ओकर दाई पाके लेगे कभू ओर ददा ह सइकिल म चघा के लेगे। तिसरी कलास म आगे हवय तब ले

अपन होके स्कूल जाय ल नइ धरिस। कभू-कभू तो दू बेर घलो अमराय ल परे। कुंती ल स्कूल म छोड़ के आय ताहन पाछू-पाछू टूरा घलो आ जाए। गुरुजी ह धर बांध के राखे त चार घंटा बइठे। स्कूल के पढ़ई म तो किसन ह सबले कमजोर हे। गुरुजी ह पढ़ावे त ये टूरा ह गोठियाइ म मगन रहे। पढ़ई-लिखई म धियाने नइ धरे। कभू कागज ल चाबहि त कभू पिनसन खाही।

गुरुजी ह हाजरी ले बर सबे झन के नाम पुकारथे। गनेस .. आय हवं सर। रमेस .. आय हवं सर। महेस .. आय हवं सर। किसन .. सबो लइकामन किथे आय हे सर। गुरुजी किथे कस रे किसन कलास म बइठे हस अउ हाजरी नइ बोलस। किसन किथे मोर आना अउ ना आना एके बरोबर हे गुरुजी। ते लगा दे करना मोर हाजरी ल। गुरुजी किथे तोला कतको समझाले कुछू असर नइ होए। पहिली कक्षा म रेहे तभो अइसने, रेहे चौथी म आगेस तभो अइसने। अब्बड़ चुटूर-चुटूर मारथस, ठाढ़ हो अउ काली पढ़ाय रेहेव तेला सुना तो। किसन ह ठाढ़ होइस अउ मुड़ी ल गड़िया दिस। रोज चार डंडा मार खाथस तभो नइ सुधरस किके खिसीया के गुरुजी ह रुल ल उठइस। मार खाय बर किसन ह हाथ ल लमइस। गुरु जी किसन के ललियाए हाथ ल देख के किथे- ये कामा लागे हाबे रे।

किसन किथे लागे नइहे गुरुजी काली तिही ह ददा ल बताय रेहे होबे तोर टूरा ह पढ़े-लिखे नहीं किके। ओकरे सेती आज बिहनिया कून ददा सूटी म मारिस तेकरे रोल उपके हे। अतका ल सुन के गुरु जी ह रुल ल उबायच रइगे मारे के हिम्मत नइ करिस। किसन के मुड़ी म मया के हाथ रेगाइस अउ खुरसी म जाके के बइठगे। गुरुजी ह खुरसी म बइठे मने मन गुनंथे। ये लइका ल सोज रद्दा म लाय बर का उदीम करवं? सोचते-सोचत गुरुजी ह एक झन लइका के किताब के जील्द म लगे खिलाड़ी मन के फोटो ल देख डरिस। सचिन, सहवाग, सानिया, धोनी मोनी मनके अऊ अब्बड़ झन आनी-बानी खिलाड़ी मन के फोटो छपे रिहिस। ओ फोटो ल देख के गुरुजी के गुत्थी सुलझगे। किसन ल सोज रद्दा म लाय बर खेलकुद के आयोजन करे के योजना बनइस।

गुरू जी ल विचारत देख के किसन किथे कइसे तोला सांप सुंग दिस का गुरूजी कलेचुप होगेस। मारे के मन हे त मार न तोर मार म मोर अक्कल अउ बल ह बाढ़थे। गुरुजी किथे बइठ जा बेटा अउ तोर बल बाढ़थे तेला सकेले रा स्कूल के खेलकूद म काम आही। खेलकूद के नाव ले सबो लइका खुस होगे। दू घंटा पढ़ाय के बाद गुरुजी ह खेलकूद के जानकारी ब्लॉक आफिस म देना हे किके जलदी छुट्टी

देके लइका मन ल घर भेज दिस। सबो लइका मन अपन-अपन घर चलदिस। फेर किसन ह घर जाय ल छोड़के स्कूल के मैदान म खेलत रिहिस। किसन ल देख के गुरुजी किथे काली जलदी आहू रे खेलकूद के तियारी कराहूं। खेले कूदे के बात सुन के किसन बड़ मगन होगे।

दुसरइया दिन सबो लइका साते बजे स्कूल आगे। किसन घलो बिना काकरो अमराय खुदे स्कूल आगे। गुरुजी के आवत ले किसन ह खुदे खेल के डाढ़ खिच डरे रिहिस। गुरुजी अइस त प्राथना होइस। ओरी-ओरी सबे लइका कलास म जाके बइठत गिस। गुरुजी घलो कलास म गिस अउ खेल खेले बर लइका मन ल पुछथे। गनेस ते का खेल म रिबे रे? रमेस ते का खेल म रिबे? पारी-पारी सबो लइका ल पुछ के नाम ल लिख डरिस। फेर किसन ल नइ पुछिस। किसन किथे मोर नाम ल नइ लिखे हस गुरूजी। गुरुजी किथे ते चिंता मत कर बेटा मैं सबोच खेल म तोर नाम लिख देहवं।

छब्बीस जनवरी के चार दिन अगाहू स्कूल म पढ़ई ह कम अउ खेलई ह जादा होगे। इही चार दिन के स्कूल अवइ किसन ल बने लागिस। काबर के पढ़ई कम अउ खेलई-कुदई ह ओला जादा भावे। खेलकूद के दिन किसन ह सबे खेल म भाग लिस अउ सबे म ईनाम घला जीतिस। कबड्डी, खोखो म किसन के टीम प्रथम। दउढ़ अउ लंबी कूद म घला अउवल। गोला फेक, उंची कूद अउ टेटंगी दउड़ म दूसरा आए रिहिस।

गुरुजी के आयोजन सफल होगे अउ सबे खेल होय के बाद ईनाम बाटे के बेरा आगे। छब्बीस जनवरी के दिन स्कूल म गांव भर के मनखे मन जुरयाय रिहिस। लइका मन राष्ट्रगीत गाए के बाद भारत माता के जय बोलइस अउ तिरंगा झंडा के सलामी लिस तेकर पाछु गांव के सरपंच ह झंडा फहरा के ओ दिन के कार्यक्रम ल सुरु करिस। कविता-भासन अउ गीत-नाटक होय के बाद आखिर म ईनाम बाटे के बेरा आइस। गुरुजी ह नाम पुकारे अउ सरपंच ह अपन हाथ ले ईनाम ल देवे। लइका मन ईनाम ल झोके त देखइया मन ताली पीटे। पहिली तो सांस्कृतिक कार्यक्रम के इनामी बटिस तेकर पाछू खेलकूद के पारी अइस। खेलकूद म किसन ह त सात बेर ले गीस ईनाम झोके बर गीस। ईनाम बाटे के बेरा म गुरुजी ह किसन ल सबासी देके किथे सिरतोन म किसन ते आज अपन बल अउ विवेक ल देखा देस। पढ़ई म भले पछवाय हस फेर खेलकूद म सबले अगवागेस। अइसने मन लगाके खेलबे त एक दिन ते जरुर अपन नाम रोसन करबे। खेल के सातो ईनाम ल तो तोला दे डरेवं अउ

आठवा ईनाम मैं अपन आसिरवाद तोला देवथवं। बाकी लइका मन एकक दूदी ठन ईनाम पाय रिहिस फेर किसन ह सात ठन ईनाम पाय रिहिस अउ आठवा म गुरुजी के परम आसिस। ये ईनाम ला देख के ओकर दाई-ददा मन गजब खुस हो जथे। किसन के सबे दिन के गलती ल भुलाके ओकर दाई-ददा दूनो ह छाती म ओधा लेथे। ए ईनाम ह तो किसन के जिनगी के रद्दा बदल दिस। खेलकूद के दूसरइया दिन छुट्टी परिस अउ तिसरइया दिन किसन ह बिना काकरो बोले अपन मनके स्कूल जाए बर तइयार हो जथे। अब तो ओकर दाई-ददा के घलो किसन कोती ले निसफिकिर होगे।

जब ले किसन ह छब्बीस जनवरी के ईनाम पाहे तब ले खेलकूद म बने धियान देवथे। हर साल खेल म भाग ले के अच्छा खिलाड़ी बनगे। एक दिन ब्लॉक कबड्डी टीम कुरुद म किसन के चयन होगे ओकर बाद उहा ले धमतरी जिला के टीम म। जिला के टीम म घलो किसन ह अच्छा खेल के परदरसन करिस त ओला आलराउडर के खिताब घला मिलीस।

अब तो किसन ह गांव के गदहा टूरा नइ रइगै कबड्डी के चेमपियन होगे हे। खेल म आगू बाड़हे के सपना ह ओला पढ़ई म घला हूसियार बना दिस। हाई स्कूल के पढ़ई करे बर कुरुद जाथे। कुरुद स्कूल डहर ले आज ओहा राजधानी के टीम म खेले बर रइपुर गे हाबय। अब वो दिन दूरिहा नइये जब किसन ह अपन देस बर खेलही। किसन के ये बदलाव ल देख के घरवाला अउ गुरुजी के संगे-संग गांव वाला मन घलो बड़ खुस हे।

किसन ल गांव के स्कूल छोड़े नौ साल होगे हे। फेर गांव के स्कूल म जब भी खेलकूद होथे सबे झन एक घाव किसन ल जरुर सोरियाथे। गुरुजी ह हर छब्बीस जनवरी के ईनाम बांटे के बेरा अपन भासन म घलो किसन के नाम जरुर लेथे। गुरुजी किथे अइसने उन्नीस सौ नब्बे के छब्बीस जनवरी के दिन मैं अपन हाथ ले किसन ल ईनाम बाटे रेहेवं। आज देख किसन ह कतका ईनाम अउ नाम पावथे। अब कोनो दाई-ददा ये झन सोचव कि मोर लइका ह गद्दहा हे त उमर भर गद्दहा रही। कोनो न कोनो रद्दा म वहू ह अपन नाव रोसन करही। ओला जरुरत हे रद्दा देखाय के अउ ओकर हौसला बड़ाय के। अतका ल सुन के सबो झन ताली बजाथे अउ कार्यक्रम के आखरी म सब झन परसाद पाके गुरुजी के विवेक के गुनगान करत अपन-अपन घर चल देथे।

बस्तर के सांत अउ सुंदर बन म चिरई-चिरगुन के नरयई अउ नरवा ढोड़गी ले पानी के झमर-झमर बोहई मन ल मोह लेथे। अइसन मनमोहक बन म कोनो कोती ले बघवा गुरराथे त कोनो कोती कोलिहा गोहराथे। कोन जनी जंगलिहा मन इहा कइसे रई जथे, काबर की जंगल म मनखे ले जादा तो जीव जनावर भरे हे। जंगलिहा मन बर तो सेर भालू अउ सांप-बिच्छी साहज बात होगे। जिनगी के जम्मो जरवत के जिनिस इहे हे त बाहिर के दुनिया म जाके का करही।

कठियापाली म बीस घर के जंगलिहा मन के बस्ती बसे रिहिस। कुवां-बउली, सड़क, बिजली काही नइ रिहिस। पानी पसीया के निसतारी बर नरवा ढोड़गी। बेरा उवत मंगेस ह घर के दुवारी म बइठे अपन हंसिया टंगिया म धार लगावत रिहिस। ओकर टूरा बीराट ह सांझ कन बाहिर डहर गे रिहिस तेती ले बड़ेकजन भठेलिया धर के लाने हे। बीराट संग चार झन अउ धरन लागे हे ते पाए के एक ठन भठेलिया के चार भाग बनाय बर हे। मंगेस ह हंसिया टंगिया ल धोवत बीराट ल हांक पारिस। लान न रे रात कन के भठेलिया ल पउल देथवं। अतकी बड़ जीव ल चार झन धरेहव। मे होतेव ते एक्के झन दबोच डारतेवं।

बीराट किथे- तोर आंखी बरथे नही तेमा मुंधियार कन तको भठेलिया ल अकेल्ला धर डरतेस। मंगेस किथे- आंखी नइ बरे त का होगे आरो लेवत-लेवत पछलिग्गा दउड़े म फरक नइ खाय। चार हाथ के लउठी म दूहथ्था देबे ते एके बार म चितिया जथे। बाप बेटा बातिक-बाता होवत रिहिस। ओतके म बाटा वाला मन आगे। काहां हे बीराट रातिहा के भठेलिया ह। बीराट छोपी म ढांक के राखे रिहिस

तेला उघार के देखावत किथे ये दे माड़े हे। चला न रे बाटबो। टूरा मन सकलागे अब एमन बांट लिही किके मंगेस ह टंगिया ल मड़ा के मुखारी करे बर पइठू कोती निकलगे। बीराट, समेन, मिसीर अउ जगेन चारो झन मिल बाट के पउलिस। बरोबर-बरोबर चार कुढ़हेना मड़ा के एकक भाग ल रपोटिस अउ अपन-अपन घर लेगिस। बीराट के दाई ह तो दिन म एके बेर भात रांधथे वहू ल मंझन के बेरा म। मंगेस ह बिहनिया बासी खवइया ये अउ बीराट ल तुरते ताजा भोजन होना तेकरे सेती ओकर दाई ह तीन परत पिचकाट नइ करवं किके एक्कट्ठा मंझनिया के रांधे टकराहा हे। उही भात ल संझा बिहनिया करके तीन परत पुरोथे।

मंगेस ह नहा-खोर के पइठू ले अइस। बटकी म भठेलिया तोपाय रिहिस तेला खपलके एक बटकी बासी अउ परसा पान के दोना म माटरा चटनी निकाल के दिस। चटनी पइस ताहन साग पुछे के जरुरते नइहे। जीब ल लमा-लाम के सपा-सप खइस अउ हाथ पोछत निकलगे।

सांप बिच्छू अउ बघवा भालू के बीच म रइथे तभो ले जंगलिहा मन बड़ सीधा होथे। अब देख ना ओ दिन मंगेस ह जंगल ले अमली बीन के लानत रिहिस। उही समे एक झन सहरिया ह जंगल घुमे बर आए रिहिस। मंगेस के हाथ म अमली देख के सहरिया किथे- ए काये। मंगेस किथे- अमली ताय। सहरिया का पुछथे- लेके लानथस का? मंजेठ- नही ये हा तो हमर जंगल म अब्बड़ फरे हे गा।

सहरिया- अतेक अकन अमली ला का करथव। मंगेस- अमटाहा साग बनाय के काम आथे अउ लइका मन ह अमली के चिचोल ल निकाल के मिर्चा अउ नून म सऊंद के गोल-गोल लोइ बनाके ओमा काड़ी खुसेर के लाटा बनाथे। अमली के लाटा ल लइका का सियानो मन लार चुचवा-चुचवा के खाथे।

पाके-पाके अमली ल देख के सहरिया के मुंह म पानी आगे। मंगेस ल किथे ये अमली ल मोला देदे अउ के पइसा लेबे तेला बता। मंगेस ह मोटरी सुद्धा अमली ल सहरिया ल धारा दिस। का पइसा लेहूं साहेब ये तो हमर जंगलहिन दाई के बन म उपजे आसिस फर आए। जंगलहिन दाई ह हमर असन जंगल म रहवईया मन बर अपन कोरा म आमा, अमली, तेंदू, चार, काजू, बदाम, मउहा अउ बोइर, बहेरा ल उपजाय हे येला बेच के हम दंड के भागी नइ बनन। साहर म मांहगी म बेचावत जिनिस ल फोकट म पाके सहरिया ह गदगद होगे।

मंगेस ह घर अइस त ओकर गोसइन बासन ह किथे आज कइसे दुच्छा के दुच्छा के घर आगेव हो। अतेक बिकराल बन म तोला एक ठन काहीं नइ मिलिस।

मंगेस किथे एक मोटरी अमली पाय रेहेवं, रद्दा म एक झन सहरिया मिलगे मांगिस ताहन उही ल दे देवं। बासन किथे अइसने कोनो-कोनो ल तै बाटते रिबे त कतेक दिन ले पुरही। बाल्टी-बाल्टी हेरई म कुवां के पानी घलो अटा जथे। अइसन जिनिस ल गली-गली गवांय के नोहय सरेखा करके राखे के आय थोकिन यहू कोती धियान ल राखे करा। मंगेस किथे ले भई अब कोनो ल नइ बाटवं तोर मन ले मनखुसी, कांदा रांधस चाहे खोक्सी नइ खाय ते लांघन राहय, खवईया होवे आधा सीसी। जा बासी लान अउ भठेलिया ल भुंज डारे होबे ते दे एको फर। मंगेस ह तुमड़ी ल मियार म अरो के टंगिया ल परवा म खोचिस। डारा-पतेरा के घर दुवार म कतेक ल बाहरत बटोरत रही पाना-पतई उड़ाय रिहिस तेने मे लसरंग ले बईठगे। बासन ह भीतर गिस बटकी भर बासी म नून अउ गोंदली डार के लानिस अउ मंगेस के आगू मड़ावत किथे भठेलिया ल चितवा लेगे खाय बर हे त इही ल खावा।

मंगेस किथे ले काहीं नइ होय काखरो होय पेटेच म तो गिस। अउ टूरा बीराट काहा गेहे दिखत नइ हे। बीराट ह तोरे कस दाउ दानीराम थोरे हे वो ह भठेलिया खाय हे ते चिलवा ल खोजे बर गे हावय। ते हमर बांटा के मास ल खाय हस त हम तोर मास ल खाबो किके सिमेन, मिसीर अउ जगेन मन घलो ओकेर संग लेंझकी डोंगरी कोती गे हावय। जंगलिहा मन संग तो रोजे सेर, भालू अउ चितवा के ओरभेट्टा होवत रिथे इही पाय के मंगेस ह लइका मन के जादा फिकर नइ लागिस। गे होही सोर लेवत कोनो डहर पाही तभो अउ नइ पाही तभो आबे तो करही किके अराम करे बर खटिया म ढलंगे।

धीरे-धीरे बेरा बुड़त गिस अउ कुलुप अंधियार होगे। दाई-ददा ल लइका मन के संसो परगे। लइकुसहा लइका अपर ले जीव जनावर ले भरे जंगल कोनो होय खबराबेच करही। अभी आही तमही आही कइके देखते-देखत आधा रात पोहागे। दूनो परानी के आंखी म निंद नइहे। जइसे-जइसे रात के अंधियारी गढ़हावत गिस मन म आनी-बानी के सपना सतावत गिस। जवान लइका ल गवांय के डर म रात भर आंखी ले आंसू डरत रिहिस।

होत बिहनिया गांव के गुड़ी म मुनादी होइस। सुनव सुजान देके धियान हो... गांव के चार झन लइका ह काल रात कुन के लेंझकी डोंगरी ले लहुटे नइ हे हो....। जेन कोनो ह कहू कोती आरो पाहू त गांव म आके तुरते इतला दीहा हो....।

लइका मन ल खोजत-खोजत अठोरिया ले पंदराही बीत गे। काही सोर पता नइ चलिस। गांव के कुआं बउली, खेत-खार अउ नरवा ढोड़गी म उहीच गोठ कहा

होही कइसे होही अऊ जियत होही धन कहू सेर भालू खा डरे होही। उकर मन के डर ह वाजिब आए काबर की जंगल के कारोबर।

अब तो धीरे-धीरे मंगेस घलो अपन टूरा ल पाय के आस छोड़ दिस। देबी-देवता कर दूनो परानी ह अपन बेटा के दुख कलेस ल हरे के बिनती करिस। पीपर के पेड़ म मनौती के डोरी लपेट के गुर अउ मंदरस चड़ाइस। पानी रुको के दू गड़ी हुम धूप डार के पालगी करिस। हे जंगलहिन दाई मोर बीराट ह कोनो करा रहय फेर तोर कोरा ले झन दुरिहाय। हे अन्नपुर्ण दाई लइका के पेट कभु लांघन झन राहय ओकर मुंह म अब तही ह चारा चरावत रिबे। हे जलदेवकी मोर बीराट के तन ल तारत रइबे।

रोज के घंटा पाहर देबी-देवता के मान मनौती अउ पूजा पाठ म बासन अउ मंगेस के मन लगे राहय। अइसने देखते-देखत बारा बछर बीतगे। नानकुन कठियापाली बस्ती ह चार सौ घर के गांव बनगे रिहिस। अब लोगन मन के पिये के पानी बर कुआं बोरिंग खोदा गे हवय। गांव के लइका मन के पढ़े बर इसकूल खुलगे रिहिस। घर के जरवत के समान बिसाय बर अब गांव म सुकरार के बजार लगथे। तीर तखार के छोटे-छोटे मंजरा टोला के मन कठियापाली बजार म अपन आमा, अमली, तेदू, चार अउ गजब अकन जंगल ले बीने फल-फलहरी ल बेचे बर आवे। साहर के बयपारी मन कठियापाली बजार ले कम किमत म बिसा के लेगय अउ अपन कोती जादा दाम बेचे।

तिहार के आगु साहर के नंगत झन बयपारी मन बजार आय रिहिस। सिजन म चार पइसा जादा कमइ होथे। किंजर-किंजर के समान ल बिसावत रिहिन। ओतके बेरा आठ दस झन मनखे मन मुंह म नेकाब लगाय अइस। ककरो हाथ म नानकुन बंदूक त काकरो हाथ बाड़का बंदूक रिहिस। एके रंग के कुर्ता पेंट पहिरे बजार के चारो मुड़ा बगरगे। बयपारी मन ल चिन-चिन के मार-मार के ढनगा दिस।

कोलबिल-कोलबिल कावं-कावं के बजार ह चार झन बयपारी के मरे ले सन्नाटा पसरगे। कावंर बिता कावंर बोहे-बोहे भागे। मछर बिता टोकनी ल छोड़के भागे। येती ओती चारो कोती भागम भाग माते रिहिस। नेकाब वाला एक झन ह गोहार पार के किहिस तुमन ल डर्राय के जरवत नइ हे। हमन तुहर अउ ए जंगल के रक्छा खातिर ये रुप धरे हन। आज के बाद कोनो बाहिर वाला मन हमर जंगल भीतर के जिनिस ल बाहिर म बगराही त उकर लास अइसने बजार-बजार म परे मिलही। सबे झन नेकाब वाला मन बजार म चिट्ठी छोड़ के दोरदीर-दोरदीर जंगल भितरी

समागे। उखर जाए के पाछू थाना ले सिपाही अइस अउ चारो झन बयपारी मन के बारे म पुछताछ होइस। कोन मारिस काबर मारिस। काहा ले अइस काहा गिस। बजार के मन काही ल जानबे नइ करे त काला बताही। सिपाही मन लास ल गाड़ी म भरके लेगे। ऐती बर सबे नकाब वाला मन अपन ठउर म पहुंचके ओरी-ओरी खड़ा होगे। इसकूल के परथना के बेरा खड़ा होथे तइसने। उकर दल के मुखिया ह सबके गिनती करिस। कोनो ह भागे उक तो नइ हे किके।

गिनती बरोबर म रिहिस त सबे झन अपन-अपन मुंह के कपड़ा खोलत गिन। एक डहर के लाइन म चार झन उही गांव के गवाए लइका बीराट, सिमेन, मिसीर अउ जगेन रिहिस घलो खड़े रिहिस। सौ अक झन रिहिस होही तेमा के आधा मनखे मन बीस बरस के जवान रिहिस अउ पहिली बेर कोनो मनखे ल मार के आय रिहिस। बंदूक ल ओतका बेरा चलाय बर तो चला डरिस फेर अभी ले उखर हाथ कापंथे। बीराट गजब दिन बाद अपन मन बात बोले के बल करिस।

बीराट किथे- अब हमन ला अपन घर जावन दो ददा हो। आज ले बारा साल पाछु चितवा ल कूदावत-कूदावत जंगल के ये लेंझकी डोंगरी म ओइले रेहेन। हमला चितवा तो नइ मिलिस फेर तुमन धर के राख लेव। मार पीट के डरा धमका के तीर कमान चलइया ल बंदूक धरा देव। नानमुन चुरी के बदला हमर हाथ बड़े-बड़े कटारी अउ फरसा धरा देव। अब हम अपने हाथ ले ए जंगलहिन दाई के अछरा ल लहू-लहू म लाल करथन। हमर से ये का का करम करवत हव। अपन हाथ म बंदूक उठाय ऊंकर मुखिया किथे- अब इहा ले कोनो वापिस जाय के झन सोचव। मैं तुहर दुसमन नोहवं महूं तुहरे असन ए जंगल के बेटा अवं भाई। अपन जंगलहिन दाई के रक्छा खतिर ये रुप धरे हवं।

बीराट किथे- ए जंगलहिन दाई बलि तो नई मांगे। मुखिया- बीराट ए जंगलहिन दाई बलि नइ मांगे। लेकिन ए जंगलहिन दाई खुदे बलि के बेदी म झन चड़ जाए एकर सेती हमला बलिदान देना हे। अपन भोलापन के बलिदान देना हे, अपन सिधापन के बलिदान देना हे। ए जंगल ले बाहिर झांक के तो देख बीराट सुवारथ के दुनिया म तोर जिना दुबर हो जही। अफसर साही अउ नेतागिरी के जाहर पुरा हवा म बगर गे हवय। मुखिया अउ बीराट के गोठ बात होते रिहिस तभे कठियापाली गांव के खभरी अइस। उहा के बजार म आए लोगन मन ल सिपाही मन धर के थाना लेगे हे। रात भर थाना म बइठार के राखे हे। मार पीट के पुछताछ करत हावय। अतका बात ल सुन के मुखिया के मन के आगी अऊ गुंगवागे। तुरते

सबला बला के आदेस करिस जाव थाना के सिपाही मन बता दव। हम बिगर करनी के काकरो काल नइ बनन। जेन हमर जंगल के पै उघारही, जंगलिहा के बिनास चाहही ओकर इही दसा होही। बीराट घलो अपन गांव के लोगन मन ल बचाय बर थाना कोती दउड़ परथे। थाना के एकठन खोली म गांव के सबे सुजानी सियान मन संग ओकर ददा मंगेस घलो ओइले हे।

थाना आके सिपाही मन कोती बंदूक तान देथे। एला देखके सिपाही मन गोली दागे के सुरु कर दिस। दूनो डहर ले ठाए-ठाए बंदूक चलिस। दूनो कोती के कतको मनखे घायल होगे कतको के परान निकलगे। तभो ले आखिर तक लड़ई चलते रिहिस। खोली म धंधाय गांव के मनखे मन ये जीवन मरन के तमासा ल यमराज बरोबर अपन आंखी ले देखत राहय। अंधाधुंध मार काट ले थाना के सिपाही मन ल ढलगाए के बाद सबे झन नकाब वाला मन गांव वाला ल छोड़ाइस। लड़ई म मुर्छा साथी ल उठा-उठा के लेगत गिस अउ मुर्दा म कपड़ा ढांक पांच मुठा माटी डार के फेर अपन जंगल म समागे।

गांव वाला मन कोन ल बने काहय कोन ल गिनहा। मनखे ल मनखे मार गिराइस इही भर तो देख पइस सियनहा। चार ठन मुर्दा देह उही मेर परे रिहिस। मंगेस ह दम करके तिर म गिस अउ मुंह म ढकाय कपड़ा ल उघार के देखिस। गांव ले निकले चारो लइका के भुलाय दिन के सुरता ह फेर बकबक ले आंखी म छपगे। कलहर के रो डरिस। बात ल कोनो परतित नइ करही किके कोनो ल नइ बतइस। बीराट अउ ओकर तीनो संगवारी के देह म फेर कपड़ा ओढ़ा के किरिया करम करा दिस। कठियापाली ले उपजिस सवाल ऊपर सवाल। ये का होइस? कइसे होइस? फेर ए जगल के पै ल कोनो नइ जान पइस। बारा साल ले टूटे आस के डोरी जुरे के पहिली जरके खपगे। कोनजनी ओ चारो लइका जियत रितिस त अऊ कतका पै उघरे रइतिस। सियनहा ह कोनो कहिनी सिरजन करइया के किताब के पाना ल आधा लिख के छोड़े बरोबर छोड़ दिस। काबर कि पै के खुदी उकेरबे त घेरी-बेरी हमरे जंगलहिन दाई के कोरा ह लाल होही अउ कोख ले फेर बैर बांधे पूत पैदा हो जही। जिही मेर के आगी तिही मेर जुड़ा जए तउने ह बने।

तेरह

गांव म काकरो घर चिट्ठी अवइ साहज बात नोहे, वहु म सरकारी चिट्ठी। काकरो घर म आथे तव गांव भर म सोर उड़ जथे। काबर अइस, काकर बर अइस गांव-गांव जान डारथे। फेर मंगतू गउटिया घर के चिट्ठी के सोर नइ उड़े। ऊंकर घर तो महीना पंदराही म चिट्ठी आतेच रिथे। चिट्ठी झोकत-झोकत ओकर उम्मर पोहावथे। गांव म कोनो पढ़े-लिखे ल नइ जानत रिहिस ते बखत ले ओकर घर म चट्ठी आवत हे। अब तो वोकर नानकुन टूरा रतनू ह चिट्ठी पढ़ डरथे।

पोस्टमेन ह सइकिल के ठिनठिनी बजावत अइस अउ ठउका मंगतूच के दुवारी म सइकिल टेकाइस। मंगतू ह मुहाटी म चोंगी पियत बइठे रिहिस। अपन ह चिट्ठी ल नइ झोकिस रतनू ल किथे- जात रे रतनू पेरन्हा खार के पेसी के चिट्ठी ल झोक। डोकरा ह पढ़े-लिखे नइहे फेर चिट्ठी के रंग ल देख के जान डारथे पेसी के हरे किके। रतनू ह चिट्ठी ल झोकिस। उदास मन ले काहत हे अऊ कतका दिन ले पेरही ये पेरन्हा खार के पेसी ह। मंगतू ह भले आधा उमर के होगे फेर ओकर मन म गजब बिस्वास भरे हे। रतनू ल समझावत किथे- हमर जियत भर लड़बो थाना कछेरी ल ये हर हमर पुरखा के चिन्हा ये।

मंगतू ह अपन आगू के दिन ला सोरियावत हे। सौ अक्कड़ के जोतनदार मंगतू गउटिया काहत लागय। नाव हे मंगतू फेर ओकर दान धरम ल गांव-गांव जानथे। मंगतू के दुवारी ले कोनो दुच्छा नइ लहुटत रिहिस। गजब खेती-खार अउ रुपिया पइसा वाला रिहिस। आदत बेवहार म देवता बरोबर माने गांव वाला मन। ओकर पुछे बिना गांव म एक ठन पाना नइ डोलत रिहिस। मेला-मड़ई होवे चाहे रमायन

किरतन। मंगतू गौटिया अगरबत्ती बार के सुरु करय। जम्मो परमुख काम म अगवा बरोबर ठाड़हे राहय।

हांसी खुसी ले सबो काम ल सीध पार के घर जाय ताहन वोकर मन उदास होजय। दुवारी म चड़ते साथ गउटनीन के उतरे थोथना। मंगतू ह कुछू केहे नइ पाय रिहिस गउटनीन के सुरु-दिन भर तोला घर-दुवार के संसो नइ राहय। बेरा उतरथे त घर डहर लोरहकथस। तोर अइसने करनी के सेती हमर खेती-खार बिगड़तहे। एका झन लइका ल कोरा म ओधा लेतेन ते हमरो डिह-डोंगरी म दीया बारतिस। मरत खानी एक मुठा पानी देतिस। येहा गउटनीन के रोज के बोली आए। बपरा मंगतू हा कलेचुप सुनय अउ गउटनिन ह अपन मन के बोझा ल हरु करय। बीस बछर होगे रिहिस तभो ले ओकर कोरा ह हरु गरु नइ होइस।

दिनो-दिन गउटनीन ल घुना खात रिहिस। तब मंगतू गउटिया ह अपन कका के टूरा परेम ल अपन कोरा म ओधा लिस। परेम ह अपन बाप कर बाटा म एक ठन टेपरी ल पाय रिहिस। बाड़हे परवार म एक ठन टेपरी के धान कतेक दिन ले पुरही। राहत ले खावय ताहन खंगे त बाड़ही मांग के गुजारा करय। साल के साल बाड़ही मंगई म ओकर उपर करजा लदाय राहय। मंगतू ल परेम उपर दया आगे अउ गउटनीन ह घला परेम ल चाहे।

परेम ह गजब कमइया घला रिहिस। गउटनीन के केहे म परेम ह अपन लोग लइका सुद्धा गउटिया घर आगे।

गउटिया ह अपन धरम-करम के काम करय अउ परेम वोकर खेती-खार के सरेखा करय। मंगतू के दया-धरम हा भगवान के आंखी म दिखत रिहिस। परेम के गौटिया घर अवई हा फलित होगे।

चार महीना के बिते ले गउटनिन के पांव भारी होगे। दूनो परानी ल गजब खुशी हागे। ऊकर म बाबू अइस तव मानो दुनिया के जम्मो सुख वोकर आगू म आगे। लइका के लालन-पालन म दूनो परानी ह जम्मो बेरा ल पोहा दए। सबो खेती खार के देख-रेख ल परेम ह करय।

एक दिन उदुप ले परेम ह गउटिया के घर ल छोड़ के पटइल बाड़ा म रेहे ल चल दिस। वोकर मन के बात उही जाने मंगतू गजब पुछिस फेर परेम ह एक भाखा नइ बकरिस। पटइल के टूरा ह साहर म वकील हे अउ सबे परवार सुद्धा साहर म रइथे। पटइल ह एक दिन गांव आइस त गांव वाला मन ओकरे मुंह के सुनिस कि परेम ह बाड़ा ल बिसा डरे हाबे।

गउटिया-गउटनिन के बियाए लइका ह बाड़ही तब मोला धुतकार दिही कइके परेम ह धोखा ले आधा जमीन ल अपन नाव करा डरे रिहिस। परेम ह मंगतू बर मने-मन गजब कपट करके ओकर गोद बेटा बनके जमीन ल वकील करा बेच डरे रिहिस। सइताहा परेम ह खाए पतरी म छेदा करही कइके मंगतू ह का जानय।

जानबा होइस त मंगतू अउ परेम म गजब झगरा झांसी होइस। गांव म बइठका सकलाइस। गांव के बइठका म परेम ह अपन गलती ल कबुलिस। उकील के भपकी म करनी करे हवं किके बकरिस। परेम ह अइसन गुनहगरा होही किके मंगतू का जानय।

गांव वाला मन घला नइ सोचे रिहिस कि परेम अइसन करनी करही किके। जेन ह आसरा दिस, करजा बोड़ी ले उबारिस उही ल दगा देदिस। परेम के करनी कबुले ले का होही। गांव के बात गांव नइ रिहिस। कोट कछेरी म आगे रिहिस। मंगतू ह घला कछेरी म दरखस दिस। पेसी ऊपर पेसी बाड़त गिस।

बाप पुरखा थाना-कछेरी देखे नइ रिहिस तेन ह आज अपन पुरखा के चिनहा ल बचाय बर जी परान ल दे के भीड़े हे। पेसी के चक्कर म मंगतू के कोठी अटगे। धनहा डोली ह परिया परगे। वो खेत ल न वकील बो सकत हे न मंगतू अऊ परेम तो वो खार ले दू कोस दूरिहा रेगथे। गांव म परेम बर अब काकरो करा मीठ बोली नइये। कोनो वोला एक पइसा के नइ पतियावतहे। बनि भुती बर लुलवावथे। जेने पावथे तेने धुतकार के काम देवथे। परेम ह जेन वकील के भपकी म करनी करे रिहिस तेनो ह अपन बाड़ा ले निकाल बाहिर कर दिस।

मंगतू ह मुड़ी धरे बइठे हे। खेत के आखरी सुनई हे अउ घर म चार आना पइसा नइये। गांव म खेती के जमीन ल खेती के पाछू बिगाड़ डरे हे। घर भर बाचें हे कइके मंगतू मने-मन सोचत हे। खेत के आखरी पेसी बर रूपिया के जुगाड़ म लगे हे मंगतू हा। वकील संग मानमनौता हो के खेत ल पा लिही। फेर बदली म वकील ह गजब अकन रुपिया मांगत हे। रतिहा कुन मंगतू मने-मन इही गुनथे कि बिहनिया घर ल गिरवी धरबो। अउ गुनत-गुनत आंखी ल मुंदे खटिया म डलगे हे।

थोरके म बादर लदलदा गे। गरज घुमर के पानी बरसे लगगे। मंगतू गउटिया कर तो घाम पानी ले बांचे बर घर हाबे। फेर परेम करा घर दुवार कांही नइ बाचिस।

बरसत पानी म एकर छानी ओकर छानी लुकावत हे। रदरदउवन पानी म पेरम ह गउटिया के पिछोत म लुकाय हे। बिकराल पानी म गांव चोरो बोरो होगे, भाड़ी अउ देवाल मन ओदरत हे। आधा रात के बिजली म पानी परेम ह अपन लोग

लइका ल पोटारे दिवाल तिर ओधे हे। थोरकेच म बादर गरजिस अउ बाड़ा के एक डहर के देवाल ह भकरस ले ओदारगे। धनतो परेम डहर के देवाल नइ गिरस नइते माई–पिल्ला जात रितिस।

बिजली के अंजोर म देवाल डहर ल परेम देखिस त नानकुन बटलोही गिरे राहय। बटलोही के भीतर म गजब अकन मोहर मन जुगूर–जुगूर चमकत रिहिस। पानी के धार म मोहर मन ऐती ओती ढुलत रिहिस।

परेम ह देखते साठ जान डरिस कि गउटिया के ददा ह देवाल म दबाय रिहिस होही तेने मोहर मन ह आज देवाल संग गिरगे। रात के अंधयारी म परेम के छोड़ कोनो अउ नइ देखिस। उपर ले गजब पानी घलो गिरत रिहिस। मंगतू गउटिया अउ रतनू मन ह पानी गिरथे किके ओदरे देवाल ल देखे बर नइ उठिस।

परेम एक मन म सोचे ए मोहर ल धर के अपन दरिदरी ल दूरिहा लव का। फेर दूसर मन म सोचे कि ए ह तो गउटिया के मोहर आए। एक बेर गउटिया संग दोगलइ करे हवं तेकर सजा मैं अभी भोगते हवं। अउ अब कहू मैं सइता के मारे ये मोहर ल गटकहूं त कोन जनी आगू अऊ का दुख के दिन देखे ल परही। इही सोच के मन म सइता बांधे रात भर पानी गिरत म मोहर ल सकेलिस अउ बटलोही म भर के राखे रिहिस। बिहनिया पानी छोड़िस। गउटिया जागिस त देखिस अपन गिरे देवाल ल। ओला थोरको गम नइ रिहिस कि देवाल म मोहर गड़े रिहिस होही किके।

परेम के मन के मईल हा रतिहा के पानी म धोवागे रिहिस। छानी कस ओरछा आंखी ले पछतावा के बुंदा टपकत रिहिस। मंगतू के पांव म गिर के रात के बात बतइस अउ बटलोही भर मोहर लउटाइस। परेम ह छिमा–छिमा काहत रोवत रिहिस। मंगतू ह परेम के सफा मन ल देख के छिमा कर दिस।

अब मंगतू अउ परेम ह मिंझरके खेत के पेसी लड़िस अउ जीत घला गे। परेम के करनी ल लइकुसहा उमर के गलती जानके मंगतू अउ गउटनीन भुला दिस अऊ फेर अपन कोरा म ओधा लिस। मंगतू के अब एक नही दू बेटा होगे। गजब दिन ले परिया परे पेरनहा खार ह फेर परेम के मेहनत ले फेर हरियागे।

–सिरागे–

परिचय

नाम - जयंत साहू

पिता - श्री अमरसिंह साहू

माता - श्रीमती पार्वती साहू

योग्यता - स्नातक
- लोक संगीत डिप्लोमा
- छत्तीसगढ़ी भाखा अउ साहित्य म डिप्लोमा
- पी.जी. डिप्लोमा इन पत्रकारिता
- नैमित्तिक कंपेयर दूरदर्शन, रायपुर छ.ग.
- वार्ताकार आकाशवाणी, रायपुर

रंगकर्म - चित्रोत्पला लोक कला परिषद, रायपुर
- पुछव मंच कांदुल, रायपुर

सचिव - नव उजियारा सांस्कृतिक, साहित्यिक संस्था

रूचि - कला - साहित्य - संस्कृति

प्रकाशक सह संपादक - अंजोर (छत्तीसगढ़ी मासिक पत्र)

लेखन/ प्रकाशन - बरछाबारी, हरिभूमि, इतवारी, देशबंधु, अमृतसंदेश, प्रखर समाचार, सांध्य छत्तीसगढ़, पत्रिका, शाश्वत राष्ट्रबोध, छत्तीसगढ़ ध्वज, किसान वीर, नई कलम अउ गजब अकन पत्र-पत्रिका म।

❑ हमर ठउर

ग्राम- डूण्डा, पोस्ट- सेजबहार,

जिला / तह. रायपुर, छत्तीसगढ़

गोठबात नं. - 9826753304,

Email-: jayantsahu9@gmail.com

Blog -: charichugli.blogspot.com

-: jayantsahu.blogspot.com